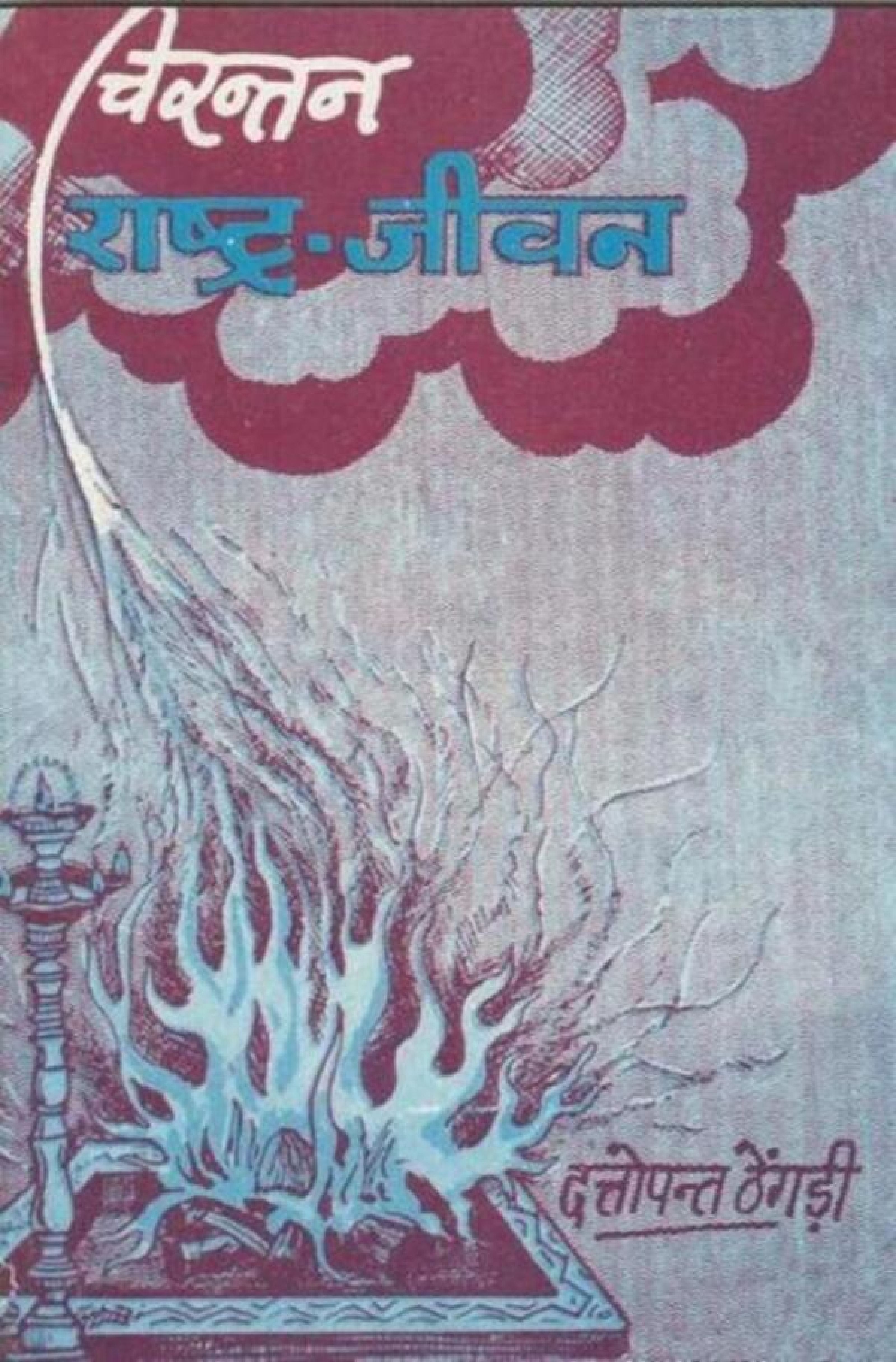
चिरन्तन
राष्ट्र-जीवन
दत्तोपन्त ठेंगड़ी

# चिरन्तन

# राष्ट्र-जीवन

**- दत्तोपंत ठेंगड़ी**

# चिरन्तन राष्ट्र-जीवन

दत्तोपंत ठेंगड़ी

**लोकहित प्रकाशन, लखनऊ**

**प्रकाशक :**

लोकहित प्रकाशन, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ – २२६००४

**पंचम् संस्करण**

कार्तिक पूर्णिमा, संवत् २०५९, १९ नवम्बर, २००२, युगाब्द- ५१०४

**मूल्य** : रु. ७. ००

**मुद्रक :**

नूतन आफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ - २२६००४

## अपनी बात

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ गत तीन-चार वर्षों से सर्वाधिक चर्चा का विषय बना हुआ है। दुर्भाग्य का विषय है कि संघ जैसे महान् देशभक्त, अनुशासित, आदर्शवादी एवं सिद्धान्त समर्पित संगठन के सम्बन्ध में देश के कुछ स्वार्थी तत्त्व निरन्तर कुप्रचार में लगे हैं, उसके कारण समझदार लोगों में भी कुछ भ्रम का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। संघ की हिन्दु-राष्ट्र की कल्पना पर बड़ा विवाद खड़ा किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में इसी विषय पर सुप्रसिद्ध मौलिक विचारक एवं विद्वान श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी के दो भाषणों का संग्रह किया गया है।

विश्वास है कि श्री ठेंगड़ी जी के अत्यन्त सारगर्भित एवं तर्कपूर्ण विचारों को पढ़कर पाठकों को राष्ट्र-चिन्तन की दृष्टि से एक सही दिशा तो मिलेगी ही तथा संघ के सम्बन्ध में अनेक भ्रमों का निवारण भी होगा।

- प्रकाशक

स्वाधीनता दिवस, संवत् २०५८

२६ जनवरी, २००२

# राष्ट्र - एक चिन्तन

हम जानते हैं कि आज हमारा देश विचित्र परिस्थिति में खड़ा है। एक समय यह देश वैभव की चरम सीमा तक पहुँचा था। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' याने हम सुसंस्कृत हैं बाकी दुनिया को सुसंस्कृत करेंगे, यह प्रतिज्ञा हमारे पूर्वजों ने की थी और साम्राज्य की हमारे यहाँ जो कल्पना है वह राजनैतिक साम्राज्य की नहीं, शासकीय साम्राज्य की नहीं तो सम्पूर्ण मानवता के लिए उपकारक इस तरह के आदर्श का साम्राज्य, सांस्कृतिक साम्राज्य की है। इस भूमि से हाथ में तलवार लेकर नहीं, तो संस्कृति का संदेश लेकर यहाँ के प्रचारक दुनिया के विभिन्न भागों में जाते थे, वहाँ लोगों को सुसंस्कृत करते थे और जिस तरह से जगद्गुरू का पद इस देश को प्राप्त हुआ था, वह एक गौरवशाली भूतकाल हमारे सामने है। उस समय समाज की एक स्थिर रचना थी उसमें हर एक को अपनी रुचि, प्रकृति और प्रवृति के अनुकूल काम करते हुए आत्मविकास और उसके माध्यम से सर्वसुख मोक्ष प्राप्त करने का पूरा अवकाश था और जहाँ हर एक व्यक्ति सम्पूर्ण समाज के साथ एकात्म रहता था। इस तरह की एक आदर्श अवस्था हमारे देश ने भूतकाल में देखी है और भविष्य के लिए हम लोगों की ऐसी प्रतिज्ञा है कि 'परम् वैभवंनेतुमेतत् स्वराष्ट्रम्' यानी इस हिन्दू राष्ट्र को हम परम् वैभव तक ले जायेंगे। यह भविष्य के बारे में हमारी आकांक्षा है।

## भारत ही पथ प्रदर्शक

यदि आज की हमारी अवस्था देखी जाय तो बहुत पिछड़ी हुई ऐसी अवस्था है। भौतिक दृष्टि से देश में ६० प्रतिशत से अधिक लोग दरिद्र रेखा के नीचे हैं और बयालीस करोड़ लोग पूर्ण रीति से निरक्षर हैं। इस तरह की पिछड़ी हुई अवस्था में हम हैं। जिन्होंने समुद्र देखा है वे जानते होंगे कि समुद्र की लहरें कैसे एक के ऊपर एक बढ़ती जाती हैं। जब लहरें आती हैं तो वे ऊपर उछलती हैं फिर नीचे जाती हैं और फिर ऊँचे जाती हैं। इस तरह से जब लहरें आगे बढ़ती हैं तो उस समय उनका एक उच्च बिन्दु आता है, फिर एक निम्न बिन्दु आता है। फिर उच्च बिन्दु आता है, फिर निम्न बिन्दु आता है। दो उच्चतम बिन्दुओं के बीच जो निम्न बिन्दु रहता है उस बिन्दु पर हम आज खडे हैं। एक उच्चतम बिन्दु भूतकाल में था, दूसरा उच्चतम बिन्दु हमें

प्राप्त करना है। किन्तु जैसा कि लहरों का निम्नतम बिन्दु रहता है उस अवस्था में आज हमारा समाज है और इस अवस्था में हम ऊपर कैसे जा सकते हैं। इस दृष्टि से आत्म-चिन्तन करने की सम्पूर्ण समाज को आवश्यकता है। किन्तु जहाँ आज हम यह दुर्दशा देख रहे हैं वहाँ इतिहास शास्त्र का जिन्होंने गहन अध्ययन किया, ऐसा एक श्रेष्ठ पाश्चिमात्य इतिहासज्ञ 'अरनाल्ड टायन्बी' ने हमारे देश के विषय में जो अपेक्षा व्यक्त की है वह पढ़कर बड़ा आश्चर्य होता है। उन्होंने यह कहा है कि सम्पूर्ण संसार आज संघर्षमय है, क्योंकि तरह-तरह के विभेद संसार में हैं; इस संसार को सुख का, शान्ति का रास्ता यदि दिखाना होगा तो वह हिन्दुस्थान ही दिखा सकता है और उन्होंने ऐसा कहा कि अलग-अलग कारणों से इस देश में इतनी विविधताएँ हैं कि इन सब विविधताओं के रहते हुए यदि एकात्मता का सूत्र यहाँ बलवान हो सका और विविधता में एकात्मता का सूत्र रखने वाला समाज यदि मॉडल के रूप में यहाँ निर्मित हो सका तो फिर उसी का अनुकरण करके सम्पूर्ण संसार को किस तरह विविधता के अन्तर्गत एकात्मता के सूत्र में बाँधा जा सकता है, यह प्रयोग करने की प्रेरणा प्राप्त हो सकती है। आने वाले भविष्य में, संघर्षमय विश्व को सुख-शांति का रास्ता दिखाने के लिए एक मॉडल समाज निर्माण होना है तो वह इसी देश में निर्माण हो सकता है। इस तरह की अपेक्षा 'अरनाल्ड टायन्बी' जो एक श्रेष्ठ इतिहासज्ञ पश्चिम के माने गये हैं, उन्होंने व्यक्त की। बड़ी विचित्र बात दिखती है। इधर तो हम अपनी दुर्दशा से पीड़ित हैं और उधर एक प्रसिद्ध इतिहासज्ञ इस तरह की बड़ी अपेक्षा हमसे कर रहे हैं। यह दो परस्पर विरोधी बातें हैं, ऐसा दिखाई देता है।

## यह हिन्दू राष्ट्र है

अब यह जो राष्ट्र है, इस राष्ट्र को हम लोगों ने स्पष्ट रूप से कहा कि यह हिन्दू राष्ट्र है। नॉननिगोशिएबल (Non-nigociable) हिन्दू राष्ट्र है। हिन्दू राष्ट्र यह शब्द सुनते ही जो केवल वोटों के कारण बेचैन होने वाले लोग हैं, उनके दिमाग में जरा चक्कर आने लगता है, क्योंकि वे न तो हिन्दू जानते हैं न राष्ट्र जानते हैं। (दे आर विशफुली इग्नोरेंट आफ बोथ हिन्दू ऐज वेल ऐज राष्ट्र) केवल वोटों का हिसाब-किताब चलता है इसलिए हिन्दू राष्ट्र सुनते ही उनको लगता है कि कुछ गड़बड़ हो गयी। वोट निकल जायेंगे। समझ लेना चाहिए कि यह हिन्दू शब्द है क्या? राष्ट्र शब्द यह है क्या?

## पाश्चिमात्य कल्पना

राष्ट्र यह एक शब्द है- अंग्रेजी में Nation, ऐसा उसका भाषान्तर हुआ है। और अंग्रेजी भाषान्तर करते हुए Nation के जो नियम हैं वे राष्ट्र पर लागू होने चाहिए, ऐसा आग्रह किया जाता है। पहले तो यह अन्वेषण का विषय है- इसके विषय में मैं अपना निष्कर्ष नहीं देना चाहता, लेकिन यह एक अन्वेषण का विषय है कि पश्चिम के लोगों की 'Nation' यह संस्था और हमारी 'राष्ट्रकल्पना' दोनों क्या एक ही हैं? क्योंकि हमारा राष्ट्र तो अतिप्राचीन है, सनातन है। इतिहास ने जब आँखें खोली तो हमको राष्ट्र-स्वरूप में ही देखा। उनकी 'Nation Concept' बहुत नयी है। डा. अंबेडकर ने अन्वेषण करते हुए कहा कि पहले योरोप में 'Nationalism' नहीं 'Tribalism' था। Tribalism का मतलब है टोलियाँ। कृषि का अन्वेषण नहीं हुआ था और इसके कारण पशु-पालन और शिकार ये दो ही धंधे थे। तो अपने पशुओं का पालन करने के लिए उनको एक स्थान से दूसरे स्थान पर चारे की तलाश में जाना पड़ता था। शिकार के लिए भी एक स्थान से दूसरे स्थान जाना पड़ता था। इसके कारण अनवरत भ्रमण करना पड़ता था। तो ये घुमंत जातियाँ यूरोप में भ्रमण करती थी, इसके कारण किसी भी एक भूमि के बारे में आत्मीयता होने का प्रश्न नहीं था। बाद में जब कृषि की खोज हो गयी और कृषि के लिए एक भूमि पर रहना आवश्यक हुआ तब Tribalism - यानी गोत्रीय, इसके साथ-साथ भूमि के विषय में प्रेम- यानी 'Territorialism' यानी प्रादेशिकत्व, दोनों का संयोग हुआ- Synchronization हुआ। और "Tribalism's Territorialism" 'गोत्रीयत्व' और 'प्रादेशिकत्व' इनके संयोग से 'Nationalism' निर्माण हुआ।

ऐसी खोज करते डॉ. अम्बेडकर ने कहा। यह प्रक्रिया उनका कहना है कि लगभग ३००-४०० साल में ही हुई। २५०-३०० वर्ष पहले इंग्लैण्ड के राजा को 'King of England' नहीं कहा जाता था 'King of the English' कहा जाता था। 'King of France' नहीं था 'King of French' था। 'King of England', 'King of France' यह जो Territorialसंज्ञा है, यह २५०-३०० साल की बात है। थोड़ा बहुत 'Nationalism' का प्रारम्भ यूरोप में, जिसको Trico Germanic Invasions कहते हैं उसके पश्चात् हुआ और विशेष रूप से यह भावना पोप की अधिसत्ता के खिलाफ

अलग-अलग राजाओं में जो प्रतिक्रियाएँ निर्माण हुईं इसके फलस्वरूप है। और विभिन्न साम्राज्यवादों के खिलाफ अलग-अलग लोगों में जो प्रतिक्रिया थी उसके फलस्वरूप ज्यादा से ज्यादा ३००-३५० साल में यह Nationalism की भावना पैदा हुई। अब यह Nationalism की भावना पूरी है ऐसा भी मान लिया तो मनोविज्ञान की दृष्टि से यह सोचने की बात है और इस पर अन्वेषण होना चाहिए कि गुणात्मक दृष्टि से, सनातन काल से चलता आया हुआ जो राष्ट्र है, उस राष्ट्र के लोगों के मन में अपनी भूमि के विषय में जो एकात्मता का भाव होगा, राष्ट्र के विषय में जो एकात्मता का भाव होगा, उसकी उत्कटता (Intensity) और केवल ३००-४०० साल में जिन्होंने एकात्मता का अनुभव किया उनकी एकात्मता की Intensity, उत्कटता- दोनों उत्कटताओं में कुछ अन्तर है क्या? यह एक खोज करने का विषय है।। होना चाहिए, ऐसा मैं समझता हूँ। ज्यादा देर तक भूमि और जन के साथ एकात्मता का भाव और थोड़े दिन तक एकात्मकता का भाव उनमें उत्कटता की दृष्टि से Intensity की दृष्टि से बहुत अन्तर होगा ऐसा मैं मानता हूँ। किन्तु यह एक अन्वेषण का विषय है।

## राष्ट्र और राज्य एक नहीं

दूसरी बात हिन्दुस्थान में जो लोग राष्ट्र की बात करते हैं वे राष्ट्र और राज्य दोनों को एक ही समझते हैं। वास्तव में राष्ट्र और राज्य दोनों क्या एक ही हैं? अलग-अलग बात है। इतिहास में हम देखते हैं कि अलग-अलग बात है। आज भी हम देखते हैं कि अलग-अलग बातें हैं, राष्ट्र अलग बात है और राज्य अलग बात है। यह ठीक है कि प्रथम महायुद्ध के पश्चात 'Nation State' 'राष्ट्र-राज्य' कल्पना का उदय हुआ। एक राष्ट्र एक राज्य में रहना चाहिए। यह बात आई। बात अच्छी है। हम उसका स्वागत करते हैं। किन्तु दो चीज, आज के राष्ट्र और राज्य हमेशा समव्याप्त रहेंगे, ऐसा नहीं दिखाई देता। एक राष्ट्र- एक से अधिक राज्य, एक राज्य- एक से अधिक राष्ट्र- दोनों तरह के उदाहरण आज की तारीख में भी हम देख सकते हैं। 'चेकोस्लोवाकिया' राज्य एक है, राष्ट्र दो है। युगोस्लाविया राज्य एक है, राष्ट्र तीन हैं। Plus कुछ Pribes. सोवियत रूस में एक सौ से अधिक राष्ट्र और राष्ट्रक एक राज्य के अन्तर्गत हैं। फिर राष्ट्र एक - राज्य अनेक, जर्मनी राष्ट्र एक है राज्य दो हैं। कोरिया राष्ट्र एक, राज्य दो हैं। आयरलैण्ड राष्ट्र एक है, राज्य दो हैं। कई उदाहरण हैं। तो इस तरह से दोनों समव्याप्त

नहीं हैं। इसके अलावा दोनों के Functions भी एक नहीं हैं। यह ठीक है कि राष्ट्र और राज्य दोनों के कुछ Common Ingredients हैं। दोनों के लिए भूमि की आवश्यकता है, दोनों के लिए जन की यानी लोगों की आवश्यकता है। और इसके कारण भूमि और जन, जहाँ एक राष्ट्र - एक राज्य, यह मामला होता है, वहाँ भूमि और जन दोनों समान दिखाई देते हैं। लेकिन कार्य दोनों के अलग-अलग हैं। राज्य का जो कार्य है उसके लिए आवश्यक है कि भूमि और जन के साथ-साथ सरकार भी होनी चाहिए और सरकार का सार्वभौमत्व सर्वप्रभुत्व भी होना चाहिए। सरकार और सार्वभौमत्व के बिना राज्य नहीं हो सकता। राष्ट्र यह Government और Sovereignty के बिना हो सकता है। और हमारे देश में तो यह इतिहास ही है कि कितने ही शताब्दियों तक इसके विस्तृत भू-भाग पर हमारे देश के, हमारी सरकार नहीं थी- सार्वभौमत्व नहीं था तो भी हमारा राष्ट्र जीवित रहा। तो Government और Sovereignty दो बातें अपरिहार्य है राज्य के लिए, राष्ट्र के लिए अपरिहार्य नहीं। तो राष्ट्र यह एक लोगों की जीवन पद्धति का, लोगों की संस्कृति का नाम है। और राष्ट्र, शरीर मान लिया, तो राज्य उसका 'वस्त्र-मात्र' है। शरीर और वस्त्र इसका जो संबंध है वही राष्ट्र और राज्य का संबंध है। इसके कारण राष्ट्र और राज्य दोनों एक हैं यह समझना एक भूल होगी।

## राष्ट्र - एक सजीव इकाई

और भी एक बात है। 'राष्ट्र कल्पना' के कारण, तदनंतर जब लोगों के मन में जो एकात्मता का भाव निर्माण होता है वह; और राज्य एक होने के कारण जो एकात्मता निर्माण होती है वह, दोनों क्या एक ही प्रकार की हैं? यह भी एक देखने की बात है। ऐसा दिखता है कि राज्य एक होने के कारण उतनी एकात्मता निर्माण नहीं हो सकती है- जितनी राष्ट्र एक होने के कारण होती है; क्योंकि राष्ट्र यह एक सजीव ऐसी बात है। राज्य यह एक निर्जीव बात है। राज्य एक मशीन है। राष्ट्र एक Living Organism है। इसलिए राष्ट्र के द्वारा निर्माण होने वाली एकात्मता राज्य के द्वारा निर्माण नहीं हो सकती ऐसा दिखाई देता है। उदाहरण के रूप में अभी जो मैंने कहा 'चेकोस्लोवाकिया' में एक राज्य है, दो राष्ट्र हैं, इतने साल से एक राज्य रहने के बावजूद 'स्लाव' लोगों की माँग है कि हमारी स्वतंत्र अस्मिता है हमें अलग राज्य चाहिए। मार्शल टीटो के बाद युगोस्लाविया में तीनों राष्ट्र अलग हो जायेंगे- तीन राज्य

होंगे यह स्पष्ट दिखायी देता है। रशिया में इतने साल से- ५० साल से अधिक समय हो गया, ६० साल होने आये तो भी यहाँ एकात्मता का निर्माण नहीं हुआ। अलग-अलग स्वतंत्र अस्मिता, अलग-अलग राष्ट्र की दिखाई देती है। जो वैभवशाली राष्ट्र होता है उसके हम अंग हैं, ऐसा बताना यह मनुष्य का स्वभाव है। जैसे सम्पन्न परिवार के साथ हर एक आदमी अपना रिश्ता जोड़ना चाहता है, उसमें गौरव का अनुभव करता है। जैसे- जब ब्रिटिश साम्राज्य था उस समय, सबको हम ब्रिटिश हैं ऐसा कहने में एक गौरव का अनुभव होता था; लेकिन जैसे सम्पन्न परिवार गरीब हो जाता है, उसके ऊपर कर्ज चढ़ने लगता है, उसकी बेइज्जती होने लगती है, तो पहले उसके साथ रिश्ता जोड़ने में गौरव का अनुभव करने वाले भी कहने लगते हैं कि उसका हमारा कोई रिश्ता नहीं। ऐसी बात अंग्रेजों के साथ दिखाई देती थी। ब्रिटिशों का साम्राज्य था तब तक स्कॉटलैण्ड के लोग, नार्थ आयरलैण्ड के लोग, वेल्स ये सारे लोग अपने को ब्रिटिश कहते थे। और ऐसा आभास हुआ कि एकात्मता राज्य के कारण निर्माण हुई, किन्तु जैसे ही साम्राज्य टूट गया, गरीबी के दिन आ गये, दुर्दशा हो गयी, वैसे ही स्कॉटलैण्ड में स्वतंत्र अस्मिता जाग्रत हुई, वेल्स में स्वतन्त्र अस्मिता जाग्रत हुई और स्वतन्त्र नहीं तो कम-से-कम स्वायत्त राज्य हमारे अलग होने चाहिए इस तरह की माँग, हमारी स्वतन्त्र पार्लियामेण्ट होनी चाहिए इस तरह की माँग, यह दोनों तरफ से होने लगी। इसलिए राज्य के कारण वह एकात्मता कहाँ तक निर्माण होती है यह संदेह मन में होता है। अमेरिका में ऐसा कहते हैं, सारा एक राष्ट्र है। सब लोग इसमें गौरव का अनुभव करते हैं कि हम अमेरिकन है, लेकिन यदि कोई संकट हो जायगा तो वहाँ जो अलग-अलग Ethnic groups है वे कहाँ तक उस राष्ट्र के साथ अपना संबंध दिखायेंगे, निष्ठा दिखायेंगे यह आज नहीं कहा जा सकता। पिछले प्रथम महायुद्ध के समय वहाँ के जर्मन लोगों ने तो सीधे जर्मन स्टेट की माँग की थी, तो इसलिए जैसे ही अमेरिका प्रथम महायुद्ध में कूद पड़ा, वैसे ही सैकड़ों जर्मन लोगों को Arrest करना पड़ा। आज भी पूरी तरह से एकात्मता हुई नहीं। कितने ही दशकों से कनाडा यह एक राज्य है किन्तु कनाडा में एकात्मता का भाव निर्माण हुआ ऐसा कोई नहीं कह सकता। सेनापति देगाल का जब वहाँ दौरा हुआ था, उस समय आपको स्मरण होगा कि वहाँ French Population ने उनको मानपत्र दिया। और इस मानपत्र के समय स्पष्ट रूप से कहा कि हमारी स्वतन्त्र अस्मिता है, Separate identity है और इसलिए स्वतन्त्र

नहीं तो हमारा अलग से स्वायत्त राज्य होना चाहिए; हमारा अलग से झंडा होना चाहिए और सेनापति देगाल के द्वारा इस माँग को आशीर्वाद देने के कारण International Embarrassment पैदा हुई थी। उनको दौरा अधूरा छोड़कर आना पड़ा था। यह ताजा इतिहास है। आपको ख्याल होगा। तो राज्य के कारण वही एकात्मता निर्माण नहीं हो सकती जो राष्ट्र के कारण होती है। इसका प्रमुख कारण है कि राष्ट्र एक Living organism है, राज्य एक मशीनरी है और इसीलिए राष्ट्र और राज्य यह दो अलग-अलग बातें हैं, यह समझना चाहिए। और यह न समझते हुए, जो नियम राज्य के लिए लागू है वही राष्ट्र के लिए लागू होंगे; ऐसा कहना- पूरी जानकारी नहीं है, इसका परिचय देना होगा।

## हिन्दू - रिलीजन नहीं

आज हमारे यहाँ राष्ट्र के विषय में जो बातचीत कर रहे हैं वे बड़ी शास्त्रीय बात नहीं कर रहे हैं। गलत ढ़ंग से बात पेश कर रहे हैं। कह रहे हैं कि यहाँ संघर्ष Nationalism versus Communalism का है। राष्ट्रीयता विरुद्ध साम्प्रदायिकता। यह साम्प्रदायिकता क्या चीज है? ऐसा कहते हैं कि Religion के कारण साम्प्रदायिकता आती है। हिन्दू Religion वाले मुसलमान Religion वालों को तकलीफ देते हैं। मैं इस बात में नहीं जाऊँगा कि कौन किसको तकलीफ देता है। यह छोटी बात है। सबसे पहले तो हम यह बात देखें कि हिन्दू नाम का कोई Religion है क्या? कोई हमें यह बताए कि यह हिन्दू Religion है। इस Religion का यह मसीहा है, इस Religion का यह एक ग्रंथ है, यह देवता है। कोई बता सकता है?

## विविधता में एकात्मता

हमारे यहाँ वेद मानने वाले हैं, न मानने वाले हैं। हमारे दर्शनों में से तीन दर्शन नास्तिक हैं। हमारे यहाँ स्वर्ग को मानने वाले हैं, न मानने वाले हैं। शून्य को मानने वाले हैं और Materialism भी हमारे यहीं है। नास्तिक Philosophy जो हमारे यहाँ निर्माण हुई, शुक्राचार्य से लेकर चार्वाक तक जो सम्प्रदाय चला वह विशुद्ध भौतिकतावादी रहा। यहाँ सभी पंथ हैं, सभी सम्प्रदाय हैं। हिन्दुओं के अलग-अलग Religions हैं, परन्तु हिन्दू Religion नाम का कोई पदार्थ नहीं। फिर भी हिन्दू यह जानता है Religion क्या है? यह मनुष्य और जो अन्त में एक सत्य है उसके बीच में जो रिश्ता है उसको

Religion कहा गया है। Relationship between man and his maker, फिर उसको आप कोई भी नाम दीजिए- 'एकं सत् विप्रा: बहुधा वदन्ति।' तत्व एक ही है, अलग-अलग लोग अलग-अलग नाम से पुकारते हैं। कोई उसको विष्णु कहे, कोई शिव कहे, कोई अल्लाह कहे, कोई Father in Heaven कहे; Marxist होगा तो उसको 'Matter' कहेगा, नाम आप उसको कुछ भी दीजिए। अन्तिम तत्त्व एक ही है। उसी को अलग-अलग नाम से पुकारा जाता है। इसलिए अपने यहाँ कहा गया कि अन्तिम तत्त्व एक है, गन्तव्य स्थान एक है। वहाँ तक पहुंचने का हर एक का रास्ता अलग-अलग ही होना चाहिए। क्यों? क्योंकि हर एक का शारीरिक स्तर, मानसिक स्तर, बौद्धिक स्तर, आत्मिक स्तर अलग-अलग है। इसके कारण सबके लिए एक रास्ता नहीं हो सकता। सबके Mental back grounds अलग-अलग हैं। सबके Starting points अलग-अलग हैं। और इसके कारण सबके लिए रास्ता एक Religion हो नहीं सकता। मान लीजिए कि चार लोग चार स्थान पर खडे हैं। Bombay, Calcutta, Madras और Delhi. सबको नागपुर पहुँचना है। नागपुर लगभग बीच में है, हिन्दुस्थान के केन्द्र में; तो सबके लिए क्या आप एक दिशा बता सकते हैं? मान लीजिए कि मद्रास के आदमी को ध्यान में रखकर आपने कहा कि सबको एक ही दिशा लेनी चाहिए, उत्तर की ओर जाने की। तो हो सकता है कि मद्रास वाला नागपुर पहुँच जायगा, किन्तु दिल्ली वाला किधर पहुँचेगा? नागपुर नहीं पहुँचेगा। तो सबके लिए एक दिशा नहीं हो सकती, क्योंकि हर एक का Starting point अलग-अलग है। तो हमारे यहाँ माना गया कि हरेक का रास्ता अलग-अलग हो सकता है, होना चाहिए। उसकी प्रकृति, प्रवृत्ति, रुचि, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक स्तर और Starting point, Mental background सारा ध्यान में रखते हुए हर एक का अलग-अलग रास्ता होना चाहिए। और इसीलिए शायद ३३ कोटि देवता हिन्दुओं के हैं, ऐसा बताया गया। उस समय हिन्दुस्थान की जनसंख्या ३३ करोड़ होगी। हर एक का अलग-अलग देवता है, ऐसा माना गया। और जब भगवान् ने यह कहा गीता में -

**येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयाऽन्विताः।**

**तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम्।।** (गीता, ९/२३)

जो अन्य देवताओं के भी भक्त हैं वे मेरा ही पूजन कर रहे हैं। तो उन्होंने निश्चित रूप से उनके समय बाकी जितने भी देवता अस्तित्व में होंगे उनकी भी कल्पना की। वैसे ही उनके पश्चात जितने देवता निर्माण होने वाले होंगे दुनिया में, सबकी कल्पना उन्होंने की। They anticipated all other deities. उसको आप अल्लाह कहिए, जहोवा कहिए, कुछ भी कहिए कितने नाम हैं। तो सभी देवताओं की उन्होंने कल्पना की है, उनको anticipate किया है। उन्होंने स्पष्ट कहा है येऽप्यन्यदेवता- ऐसा कहा। और इसीलिए हमारे यहाँ पर प्रार्थना एक है- वह हमारे इस दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण करती है। वह त्रैलोक्यनाथ हरि मेरे वांछित फल मुझे दे। कामना पूरी करे। और उस त्रैलोक्यनाथ हरि का वर्णन क्या किया?

**यं शैवा: समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो**

**बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटव: कर्तेति नैयायिका:।**

**अर्हन्नित्यथ जैनशासनरता: कर्मेति मिमांसका:**

**सोऽयं नो विदधातु वांछितफलं त्रैलोक्यनाथोहरि:।।**

शैव जिसको शिव कहते हैं, वेदान्ती जिनको ब्रह्म कहते हैं, वैशेषिक जिसको कर्म कहते हैं, नैयायिक जिसको कर्त्ता कहते हैं, बौद्ध जिसको बुद्ध कहते हैं, जैन जिसको अर्हत कहते हैं, वह हरि मेरी कामना पूरी करे। यह स्पष्ट है कि यदि आज वह निर्माण होता तो शायद वह कहते कि मुसलमान जिसको अल्लाह कहते हैं, ईसाई जिसको जीसस कहते हैं, यहूदी जिसको यहोवा कहते हैं वह मेरी कामना पूरी करे। चीज एक ही है। रास्ते अलग-अलग हैं। यही इसका अर्थ है। इस दृष्टि से Religion को यहाँ Personal affair माना गया है। As strictly personal as one's tooth brush हर एक का tooth brush जैसे Personal ही होता है। ऐसा नहीं होता कि Tooth brush अच्छा है तो पूरे जन को चलो एक ही tooth brush दे दिया। हर एक का tooth brush अलग-अलग होता है। वैसे ही हर एक का Religion अलग-अलग होना चाहिए ऐसी अपने यहाँ कल्पना है। इसके कारण हिन्दू यह Religion के लिए झगड़ा करेगा यह हो ही नहीं सकता। तो उपासना पद्धति की स्वतन्त्रता रखते हुए एक बात पर हमारे यहाँ आग्रह किया गया कि यह राष्ट्रधर्म प्राण है। सनातन धर्म- धर्म याने

रिलिजन नहीं, रिलिजन उपासना पद्धति है, धर्म याने जो धारणा करता है, व्यक्ति जीवन की धारणा, परिवार जीवन की धारणा, राष्ट्र जीवन की धारणा, मानवजीवन की धारणा, विश्व जीवन की धारणा, अलग-अलग स्तर पर सम्पूर्ण जीवन की धारणा करने वाला सनातन धर्म है और योगी अरविन्द ने अपने भाषण में हिन्दू राष्ट्र और सनातन धर्म का एक अविभाज्य सम्बन्ध प्रकट किया है, व्यक्त किया है; और कहा है कि सनातन धर्म यही हिन्दू राष्ट्रीयत्व है, यह जो सनातन धर्म है वह सम्पूर्ण विश्व का है, किसी एक समूह का नहीं तो सम्पूर्ण विश्व का है यह बात हम सब लोग जानते हैं।

कई लोग जो अपनी संस्कृति को नहीं पहचानते, गलती से समझते हैं कि हिन्दू नाम का कोई रिलीजन है, पर हिन्दू एक रिलिजन नहीं है। उदाहरण के लिए किराना माल की दूकान लें। शायद इधर परचून की दूकान कहते हैं। अब आप उस दूकान में जाइये १०/- की नोट दूकानदार को दीजिए। और कहिये कि किराना नाम की वस्तु मुझे १०/- की दीजिए। या परचून नाम की वस्तु १०/- की दीजिए। कोई दूकानदार आपको दे नहीं सकता; क्योंकि वह दूकान है तो परचून या किराने की, लेकिन परचून या किराना नाम की कोई वस्तु नहीं है। तो इस संज्ञा के अन्दर और पचास किस्म की चीजें आ सकती हैं। परन्तु किराना नाम की वस्तु नहीं। उसी तरह से हिन्दू रिलिजन नाम की वस्तु नहीं है। हाँ, हिन्दू के अन्तर्गत कई रिलिजन आते हैं, सब रिलिजन हिन्दू के अन्तर्गत आ सकते हैं। सभी उपासना पद्धतियाँ हमारे अन्दर आ सकती हैं। किन्तु हिन्दू नाम का कोई रिलिजन नहीं। इसके कारण यहाँ झगड़ा होने की कोई सम्भावना नहीं। और यही कारण है कि अलग-अलग रिलिजन्स के लोगों का यदि कहीं स्वागत हुआ तो यहाँ हुआ। सबसे पहले जीसस की मृत्यु के पश्चात ५५वें साल में सेंट थॉमस (St. Thomas) यहाँ आये। उपासना पद्धति के साथ आये। ईसाइयत का पालन करते हुए छोटी-सी संख्या में यहाँ रहे, केरल में। किसी ने उनके ऊपर आक्रमण नहीं किया। फारसी यहाँ आये, अपनी पूजा पद्धति को संभाल कर रहे, किसी ने आक्रमण नहीं किया। और इजराइल ने जो ग्रंथ लिखा है उसमें कहा है कि हर देश में हमारे ऊपर आक्रमण हुआ, लेकिन हिन्दुस्थान अकेला है जिन्होंने हमारे साइनागास पर, हमारे मन्दिर पर आक्रमण नहीं किया, अकेला देश है ऐसा उन्होंने लिखा। यहाँ पूजा-पद्धति के लिए कभी झगड़ा नहीं हुआ।

## झगड़े रिलिजन के कारण नहीं- तो स्वार्थों के कारण

दूसरी बात रिलिजन के कारण दुनिया में भी क्या कभी झगड़े हुए? दुनिया में भी कभी झगड़े नहीं हुए। रिलिजन का नाम लेकर, अपना स्वार्थ बढ़ाने की जो कोशिश करते हैं उनके कारण झगड़े हुए। और यह बहाना लेने वाले दो तरह के लोग हैं। एक राजनैतिक स्वार्थ को लेकर चलते हैं, एक व्यक्तिगत स्वार्थ को लेकर चलते हैं।

हर एक रिलिजन में जब कोई व्यवस्था का निर्माण होता है- उसको Institutionalise किया जाता है, तो उस समय उसके कुछ न कुछ ठेकेदार निर्माण हो जाते हैं। जिनको उपाध्याय कहते हैं, पुरोहित कहते हैं, ऐसे निर्माण हो जाते हैं। वे यदि Vested Interest अपना बना लेते हैं, निहित स्वार्थ बना लेते हैं, तो उस निहित स्वार्थ के कारण झगड़े खड़े होते हैं।

हिन्दुस्थान में आक्रामक आये- जितने भी आक्रामक आये- सब लोगों के सामने एक समस्या थी। जो आक्रामक आये वे सभी अपने को आक्रामक नहीं कहते थे; कुछ साधु-संत थे, उनको अल्लाह का साक्षात्कार हुआ था, अल्लाह का सन्देश यहाँ पहुँचाने के लिए ही उन्होंने तलवार अपनी निकाली थी, ऐसा नहीं। पर मोहम्मद गजनी यहाँ का सोना और हीरे लूटने आया था, वह कोई साक्षात्कारी पुरुष नहीं था। तो जितने लोग आये चाहे तुर्क हो, मुगल हो, पठान हो, अरबी हो, चाहे जो आये, वे यहाँ की सम्पत्ति के लालच से आये, यहाँ शासन चलाने के लालच से आये। लेकिन दूर से आक्रमणकारी जो आते हैं उनके सामने समस्या रहती है- अंग्रेजों के सामने भी रही कि इतने लम्बे-चौड़े देश पर थोड़ी संख्या में हम कैसे शासन चला सकते हैं? अपने देश से लायेंगे तो भी कितने लोगों को लायेंगे? तो इतना यह विशाल देश है कि जब तक हम यहाँ अपनी लॉबी, अपने लिए अनुकूल इस तरह की एक लॉबी तैयार नहीं करते तब तक यहाँ शासन चलाना संभव नहीं और लॉबी चलाने का एक अच्छा रास्ता कि अपना रिलिजन यहाँ फैलाना। याने अपने रिलिजन के जो लोग हो जायेंगे वे Out Cast हो जायेंगे, बहिस्कृत हो जायेंगे और अपने लिए उतनी ही अनुकूल लॉबी बन सकती है। इस दृष्टि से यहाँ धर्मान्तरण का प्रयोग हुआ। किन्तु जो धर्मान्तरण कराने वाले राज्यकर्त्ता मुस्लिम थे वे बडे Devoted मुस्लिम थे ऐसा नहीं दिखाई देता। अंग्रेजों ने यही किया, उन्होंने अपनी ईसाइयत यहाँ फैलायी। आज भी Eastern Region में

चाहे मेघालय हो, अरुणाचल हो, असम हो, नागालैण्ड हो, ईसाइयत का जो प्रचार चल रहा है वह कोई जीसस का साक्षात्कार कराने के लिए नहीं चल रहा है बल्कि जो Political Interest है उसको बढ़ाने के लिए ईसाइयत का प्रचार चल रहा है। तो ये जीसस के कारण झगड़े नहीं हैं Eastern Region में, Political Interest के कारण हैं। यहाँ तक कि जिस पाकिस्तान की निर्मिति हुई है, आज उस पाकिस्तान के निर्माता बै. जिन्ना ये न तो मस्जिद में जाते थे, न कुरान पढ़ते थे। नास्तिक पुरुष थे। प्रचंड रूप से नास्तिक पुरुष थे। और जब उनको यह पता चला कि इस्लाम का नाम लेने से मेरी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा पूर्ण हो सकती है, उस समय उन्होंने इस्लाम का नाम लिया, वरना वे इस्लाम के बारे में कुछ भी आस्था रखने वाले नहीं थे यह बात सब लोग जानते हैं। तो राजनैतिक स्वार्थ के लिए चाहे Christianity हो, चाहे इस्लाम हो इसका उपयोग लोगों ने किया। वास्तव में Religion के कारण ये झगड़े खडे हुए ऐसा कोई नहीं कह सकता। Religion के नाम का उपयोग यह राजनैतिक स्वार्थ वालों ने किया। वैसे ही जिनका Vested Interest निर्माण हुआ था यानि Religion Institutionalise होने के बाद जो व्यवस्था आयी उसमें जिनको प्रमुखता प्राप्त हुई थी यानी Priesthood, उपाध्याय वर्ग चाहे उसको मुल्ला कहा जाय, विशप कहा जाय, पादरी कहा जाय- इन लोगों ने अपने निहित स्वार्थ के लिए भी झगड़े निर्माण किये। यह दुनिया का इतिहास बताता है। आज हमें यहाँ कहा जाता है कि हिन्दू-मुस्लिम Riots होते हैं। ठीक है यहाँ हिन्दू भी हैं मुसलमान भी हैं। लेकिन जहाँ १०० प्रतिशत मुसलमान देश हैं वहाँ Riots क्यों हुए?

## विभिन्न देशों में राष्ट्रीयता का जागरण

अफगानिस्तान में प्रथम महायुद्ध के पश्चात, जैसे सभी मुस्लिम देशों में वैसे अफगानिस्तान में भी राष्ट्रीयता का भाव जागा। और उनको लगा कि मोहम्मद से पहले भी अपनी अस्मिता अलग से थी। और इस दृष्टि से यह नया भाव निर्माण हुआ कि हम आर्यन हैं। अपनी कुछ आर्यन संस्कृति है। राष्ट्रीयता का भाव जैसे निर्माण हुआ वैसे ये Religion के ठेकेदार नाराज हो गये और उस नवजागृति का नेतृत्व करने वाले अमीर अमानुल्ला को उन्होंने पदच्युत किया। भागने के लिए बाध्य किया यह इतिहास हम जानते हैं। ईरान में भी जब नवराष्ट्रीयता का जागरण हुआ, तो उस समय Pre Islamic

Heroes जो उनके थे- सोहराब हैं, रुस्तम हैं, जमशेद हैं, बेहराम हैं, ये जो उनके इस्लाम से पूर्व, किन्तु उनके राष्ट्रपुराष थे, उनकी स्मृति का जागरण हुआ। और इस बात का विरोध वहाँ भी रिलिजन के ठेकेदारों ने किया। यह इतिहास बताता है। इजिप्त में यही प्रक्रिया हुई। टर्की में तो और भी Classical उदाहरण हमें दिखाई देता है। मुस्तफा कमाल पाशा जब आये तो उन्होंने कहा कि हम कुरान को मानते हैं, मस्जिद को मानते हैं, मोहम्मद साहब को मानते हैं, अल्लाह को मानते हैं, लेकिन हमारी राष्ट्रीयता की माँग है कि रिलिजन के नाम पर अरेबिक संस्कृति का आक्रमण तुर्की संस्कृति पर बर्दाश्त नहीं कर सकते। इस दृष्टि से जितना आक्रमण 'अरेबिक' संस्कृति का तुर्की पर हुआ था वह दूर करने के तरह-तरह के उपाय उन्होंने किये। उनमें से एक उपाय यह था कि 'कुरान का तुर्की भाषा में भाषान्तर।' कुरान अरेबिक (Arabic) में है। उन्होंने कहा कि हम अपनी राष्ट्रभाषा में कुरान का भाषान्तर करेंगे। तो ठेकेदार लोगों ने विरोध में आवाज उठायी। कहा कि यह पाखण्ड है। कमाल पाशा ने कहा कि यह पाखण्ड कैसे हो सकता है? भाई अल्लाह की प्रार्थना ही करनी है न? तो अल्लाह क्या Ignorant है? अज्ञानी है? अनपढ़ है? कि उसको अरेबिक तो ख्याल आती है, परन्तु जो तुर्की भाषा में प्रार्थना करेंगे उसको ख्याल में नहीं आयेगी? तो अवश्य तुर्की में भाषान्तर होना चाहिए। उन्होंने भाषान्तर करवाया; और एक शुक्रवार ऐसा तय किया कि जिस शुक्रवार को सारे तुर्किस्तान की सभी मस्जिदों में सरकारी आदेश के अनुसार टर्किश (तुर्की) भाषान्तर कुरान को पढ़ा जाएगा। और उस शुक्रवार को पूरे तुर्किस्तान में दंगे हुए। रक्तपात् हुआ। वहाँ कौन से हिन्दू-मुस्लिम लड़ने गये थे? सब मुस्लिम हैं, १०० प्रतिशत मुस्लिम देश हैं। लेकिन वहाँ भी दंगे हुए। किसमें-किसमें हुए? तो नव जाग्रत राष्ट्रीय लोग (वहीं से Young Turk यह शब्द आया) जो नवजाग्रत राष्ट्रीय तुर्क थे वे और जो जो Religion के ठेकेदार थे उनके अनुयायी- उनके बीच में सारे तुर्किस्तान में दंगे हुए। यह क्या Religion के कारण हुए? अपनी निहित स्वार्थ की रक्षा के लिए इस प्रकार के दंगे कराये गये। जो प्रक्रिया वहाँ है वही प्रक्रिया यहाँ है। Religion के कारण कभी दंगा वगैरह हो ही नहीं सकता।

## राष्ट्र-कल्पना रिलिजन पर आधारित नहीं

पर राष्ट्र कल्पना जो है वह Religion पर आधारित नहीं है। Religion के कारण उसमें भेद नहीं आ सकता। हमारे यहाँ यह कल्पना है कि राष्ट्र एक, Religion हर एक का अलग-अलग रह सकता है। इसके कारण परमपूजनीय श्रीगुरुजी ने बार-बार कहा कि भई आप कुरान पढ़ सकते हैं, मस्जिद में जा सकते हैं, बाईबिल पढ़ सकते हैं, गिरजाघर में जा सकते हैं। लेकिन यह मान लो कि यह राष्ट्र मेरा है। उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वज आपके पूर्वज एक हैं।

यह कहने में आपको संकोच क्यों हो रहा है कि रामचन्द्र और कृष्ण हमारे पूर्वज हैं? जो राष्ट्रीय ग्रंथ हैं- उनको आप धर्मग्रंथ माने न माने लेकिन राष्ट्रीय ग्रंथ माने- वेद हैं, वेद को न मानने वाले कई हिन्दू हैं, परन्तु राष्ट्रीय ग्रंथ के नाते मानते हैं। कोई अमेरिका में रहेगा और कहेगा कि मैं अमेरिकन National तो हूँ, परन्तु जार्ज वाशिंगटन जेफरसन-लिंकन को इसलिए नहीं मानता क्योंकि वे मुसलमान नहीं थे या हिन्दू नहीं थे। उसको वहाँ का राष्ट्रीय रहने का अधिकार नहीं रहेगा। Religion के नाते आप कुछ भी रहें- इस्लाम रहें, ईसाई रहें, शैव रहें, वैष्णव रहें, लेकिन अमेरिका में अगर वहाँ के National के रूप में रहना है तो वहाँ के राष्ट्र को मानना पड़ेगा। वह चाहे आपके रिलिजन के हों या न हों। वहाँ के राष्ट्रीय ग्रंथ को मानना पड़ेगा। Declaration of Independence है, Constitution है उसको मानना पड़ेगा। यह मेरे राष्ट्र ग्रंथ हैं ऐसा कहना पड़ेगा। जो नहीं कहेगा उसको National होने का अधिकार नहीं। वह नियम यहाँ भी लागू होना चाहिए। Religion के कारण झगड़े होते तो Indonesia में जो दृश्य है वह हम न देख पाते। Religion का और झगड़ों का कोई सम्बन्ध नहीं। इण्डोनेशिया तो हिन्दुस्थान के बाहर है लेकिन उसकी संस्कृति हिन्दू संस्कृति है। और इसके के कारण वहाँ मुस्लिम बहुल देश होते हुए भी हम देखते हैं कि मुसलमान कुरान पढ़ते हैं, मस्जिद में जाते हैं परन्तु संस्कृति के नाते रामचन्द्र जी की रामलीला भी करते हैं। महाभारत का भी वहाँ प्रचार है। विद्यार्थी सुबह वहाँ नमाज पढ़ते हैं। परीक्षा के लिए जाते हैं गणेश जी को नमस्कार करके आशीर्वाद लेकर। दोनों में कोई अन्तर है, उनको नहीं लगता। यहाँ क्यों लगता है? Religion के कारण लगता है ऐसा नहीं। यहाँ जो अन्तर निर्माण हुआ है उसका कारण है निहित स्वार्थ। यहाँ दोनों तरह के निहित

स्वार्थ हैं, मुसलमानों को दूर करने वाले, एक तो जो ठेकेदार हैं उनका भी निहित स्वार्थ है और राजनैतिक स्वार्थ तो स्पष्ट है। जैसा मैंने कहा कि परकीय आक्रामकों को, चाहे मुसलमान रहे चाहे अंग्रेज रहे अपनी Lobby यहाँ निर्माण करना था, अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए Religion को उन्होंने Exploit किया। वास्तव में Reliogious ऐसे ये लोग नहीं थे और अंग्रेजों ने 'Divide and Rule' के लिए ईसाइयत का यहाँ प्रचार किया। यह एक दुःख की बात है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात जो Political System देश में आयी वह एक विभाजनकारी System है। केवल Territorial Nationalism पर आधारित होने के कारण यह विभाजनकारी है, Divisive है। और यहाँ जो जितनी विभक्तता की बात करेगा, जितना Separatist बात करेगा उतना उसको वोट ज्यादा मिलेगा। तो वोट पाने के लिए देश का क्या होगा? उसकी फिक्र न करते हुए मुसलमानों का En block वोट मिलना चाहिए इसलिए हमारे राजनैतिक नेता भी मुसलमानों को हिन्दुओं से अलग रखने की कोशिश कर रहे हैं। आप सर्वसाधारण देहात में रहने वाले मुसलमान के पास जायेंगे तो उसके दिमाग में यह कोई चक्कर नहीं। जब तक राजनैतिक नेता वहाँ जाता नहीं और वोट पाने के लिए उसको हिन्दुओं से अलग नहीं करता और उसके दिमाग में भय निर्माण नहीं करता कि मुझे वोट दो नहीं तो तुम सुरक्षित नहीं हो, यह जब तक नहीं कहता तब तक सर्वसाधारण देहाती मुसलमान बिगड़ने वाला नहीं। वह भी जानता है कि हम यहीं के हैं। हमारा कुल-खानदान, हिन्दुओं का कुल-खानदान एक है। सब कुछ जानता है। उसको बिगाड़ने वाले पहले मुगल, तुर्क थे, फिर अंग्रेज आये और अब राजनैतिक नेता आ गये और ये राजनैतिक नेता तब तक देश का विभाजन करने वाली बात करते रहेंगे जब तक या तो आज की Political System बदली नहीं जाती या आज की System रही तो भी जब तक उनको यह भय पैदा नहीं होता कि इस तरह मुसलमानों का वोट प्राप्त करने के लिए यदि हम भेद पैदा करते हैं और मुसलमानों को हिन्दुओं से अलग करते हैं, उनके मन में हिन्दुओं के बारे में भय पैदा करते हैं तो इसके कारण मुसलमानों का तो वोट मिलेगा, किन्तु इससे ज्यादा हिन्दुओं का वोट खिसक जायेगा; (यह भय जब तक पैदा नहीं होता) तब तक उनकी गन्दी राजनीति का यह खेल चलता रहेगा। याने मूलत: कोई भेद नहीं किन्तु ये जो मन्थरा का काम करने वाले लोग

हैं उनके कारण यह विभेद पैदा हुआ है। ये राजनैतिक नेता मन्थरा का काम कर रहे हैं और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर कीचड़ उछाल रहे हैं।

## सत्ता का स्वार्थ

संघ ने कुछ नहीं किया, ये नहीं किया, वह नहीं किया यह Defence देने के लिए मैं खड़ा नहीं। I will not be apologetic. Apologetic किनके साथ! इनके साथ! इनकी क्या कीमत? कौड़ी कीमत के लोग हैं जो अपना शब्द पालन नहीं कर सकते। जो झूठ बोलते रहते हैं। राजनैतिक स्वार्थ के लिए जैसे घोड़े और बैल चौराहे पर खड़े किये जाते हैं बेचने के लिए, वैसे ही जो लोग खरीदे जाने के लिए, बेचे जाने के लिए चौराहे पर खडे हैं ऐसे Political Leaders के सामने हम अपना Defence दें! यह इज्जतदारी की बात हमारे लिए नहीं। हम इनकी ही कुछ नहीं मानते। Defence के लिए नहीं, परन्तु चीज वास्तव में क्या है, यह समझाने के लिए, समझने के लिए वह बताने की आवश्यकता है कि आज वास्तव में कोई भेद नहीं। यहाँ के मुसलमान कोई अरबस्तान से आये नहीं, ईसाई रोम से आये नहीं। एक ही खानदान है, एक परिवार है और सर्वसाधारण मुसलमान इस बात को समझ सकता है। राजनैतिक नेताओं ने मन्थरा का काम स्वार्थ के लिए किया। जिसका जवाब दो ही तरीके से हो सकता है या तो Political System बदलना या हिन्दुओं में इतना जागरण पैदा करना कि मन्थरा का काम करने वाले नेताओं से वे कह सकें कि महाराज यदि आप मुसलमानों का Block Vote पाने के लिए उनको बिगाड़ने का काम करेंगे तो हिन्दुओं का Block vote खिसक जायेगा। ऐसा जब तक नहीं होता तब तक ये दुरुस्त होने वाले नहीं। मैं आपको बताता हूँ इनको मुसलमानों की क्या फिक्र है! क्या इन्होंने मुसलमानों के लिए कभी कोई Constructive काम किया! यदि मुसलमानों को वोट का अधिकार नहीं होता तो उन्होंने उनकी फिक्र भी न की होती। उनको गद्दी की फिक्र है। मुसलमानों की फिक्र नहीं। गद्दी की फिक्र है, हरिजनों की फिक्र नहीं। और Statement निकालने से क्या मुसलमानों की रक्षा का काम हो सकता है? तो इस बात को हमें समझना चाहिए और इस दृष्टि से यह जो प्रचार हो रहा है, इसके बारे में विशेष चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं।

## सर्वग्राही हिन्दू संस्कृति

हम इस बात को समझ लें कि रिलिजन यह विभाजनकारी नहीं। सभी रिलिजन साथ-साथ रह सकते हैं। राष्ट्रीयता का प्रखर भाव जाग्रत होना चाहिए। ऐसा यदि हुआ तो कुछ लोगों के मन में जो संदेह है कि यदि राष्ट्रीयता का प्रखर भाव जाग्रत हुआ तो हम सब लोगों को आत्मसात् कर सकते हैं, वह संदेह समाप्त हो जायगा। भई आत्मसात् करने की क्या बात है? वे अपने ही हैं। इतना है कि उनको जबरदस्ती से अपने विरोध में खड़ा किया गया है। उनको आत्मसात् करने की अपनी संस्कृति में क्षमता है। हमारी संस्कृति इतनी विशाल है कि सबको आत्मसात् करने की क्षमता है हमारी। इतिहास में इसके प्रमाण मिलते हैं। जैसे कहा कि आक्रमण हुए। विशुद्ध इस्लाम का प्रचार करने के लिए बड़े धार्मिक मुसलमान हाथ में तलवार लेकर आये ऐसा नहीं था। ये अपने-अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए इस्लाम का प्रयोग करते थे। इसके कारण जो आक्रमण हुए वे मुगल आक्रमण, तुर्की आक्रमण, पठान आक्रमण, अरब आक्रमण ऐसा था। इस्लाम का केवल उपयोग किया गया, Exploitation किया गया। इसी के कारण हम देखते हैं कि केवल हिन्दू Verses मुसलमान संघर्ष नहीं हुए, मुसलमान Verses मुसलमान भी संघर्ष हैं। बाबर जब हिन्दुस्थान में आया तो लड़ाई किसके साथ हुई? इब्राहिम लोदी के साथ हुई। इब्राहिम लोदी क्या आर. एस. एस. का था? तो यह लड़ाई किसलिए होती है? औरंगजेब जब दक्षिण में गया तो उसकी लड़ाई केवल शिवाजी के साथ नहीं थी तो बहमनी बादशाहियाँ जो पाँच थीं उनके साथ भी उसने लड़ाई की थी। वह क्या हिन्दुत्व के लिए की थी? केवल राजनैतिक स्वार्थ था। किन्तु यह होते हुए भी हिन्दुस्थान के विस्तृत भू-भाग में, विजेताओं के अधीन होने के बावजूद हिन्दू संस्कृति इतनी आत्मसात् करने वाली है कि मुसलमानों को भी आत्मसात् करने की प्रक्रिया आरम्भ हुई। आज भी आप देखेंगे कि ये राजनैतिक लोग कुछ भी कहें, लेकिन आप यदि अध्ययन करेंगे तो अरबस्थान का इस्लाम और हिन्दुस्थान का इस्लाम इसमें बड़ा अन्तर है। प्रक्रिया शुरू हुई हमारे यहाँ आकर बसने के बाद। बाहर के पराये आक्रामक मुसलमानों के भी मन में उत्सुकता तो जाग्रत हुई कि भई ये हिन्दू है क्या? समझ लेना चाहिए। तो हमारे धर्म ग्रंथों का भाषान्तर शुरू हुआ। रामायण, महाभारत, अथर्ववेद, प्रबोध चंद्रोदय, योगवाशिष्ठ इनका भाषान्तर हुआ। परशियन में उनका अध्ययन शुरू हुआ। जो Intelectual थे और जो

Aristocrats थे, उन्होंने अध्ययन शुरू किया। और यह श्रेष्ठ ज्ञान होने के कारण उसका प्रभाव उनके मन पर होने लगा और इसके कारण आपको पता होगा कि औरंगजेब ने- जो इतना कट्टर कहा जाता है- इसलिए कि उसने सांस्कृतिक ऐक्य के रास्ते में रुकावट डाली।

विचार पनप रहा था कि अल्लाह तो अल्लाह है, चाहे वह काबा में हो, सोमनाथ के मन्दिर में हो, चर्च में भी हो, हर जगह हो। तो यह पाकिस्तानी मनोवृति के नजदीक है, या शंकराद्वैत के नजदीक है, यह हर एक के सोचने की बात है। प्रभाव हो रहा था। इसलिए औरंगजेब सत्ता की लालसा से सोचने लगा कि इस तरीके से यदि हिन्दू संस्कृति का प्रभाव बढ़ता जाएगा तो हमारी Political motive का क्या होगा? इसलिए उसको Fanatic होना पड़ा। कार्ल मार्क्स ने इस प्रक्रिया का वर्णन बड़े स्पष्ट शब्दों में किया है। उसने उदाहरण दिया है कि विजेता राष्ट्र के लोग सांस्कृतिक दृष्टि से हीन होवें तथा विजित राष्ट्र के लोग सांस्कृतिक दृष्टि से यदि श्रेष्ठ होवें तो जो राजनैतिक-शारीरिक दृष्टि से विजेता हैं उसके ऊपर- जो राजनैतिक-शारीरिक दृष्टि से जित राष्ट्र हैं उसकी संस्कृति का प्रभाव हो जाता है। और सांस्कृतिक दृष्टि से जित राष्ट्र विजेता पर विजय प्राप्त करता है। उन्होंने उदाहरण दिया कि रोमन साम्राज्य था, वह विजेता था। जेरुशलम के ईसाई लोग थे वे जित लोग थे। लेकिन जित लोगों की संस्कृति श्रेष्ठ थी अत: जित लोगों ने सांस्कृतिक दृष्टि से विजेताओं पर विजय प्राप्त कर ली। और रोमन लोगों को ईसाई संस्कृति स्वीकार करनी पड़ी। यह उदाहरण देते हुए कार्ल मार्क्स कहते हैं- और मैं कार्ल मार्क्स को Verbatim quote कर रहा हूँ। भारतीय संदर्भ में, वे कहते हैं-

"The Arabs, the Turks, the Pathans, the Moghuls were being Hinduised."

कार्ल मार्क्स का कहना है कि हिन्दूकरण उनका शुरू हुआ। यह मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया जारी थी। राजनैतिक नेताओं ने उसको रोका। वरना यह प्रक्रिया जारी थी और वह केवल तब तक जारी थी ऐसा नहीं है। अंग्रेजों के समय में भी यह प्रक्रिया बढ़ती गयी और राजनैतिक परिभाषा में लोग इसका ज्ञान भले ही न रखें, किन्तु वास्तविकता यह थी कि हिन्दूकरण बढ़ रहा था। और इसी कारण आपको आश्चर्य होगा कि जिस समय

पाकिस्तान की माँग उठायी गयी- “हिन्दुस्थान हमारा है।” कहने वाले मो. इकबाल ने जब पाकिस्तान का समर्थन किया, तो मुसलमानों को भड़काने के लिए उन्होंने साहित्य लिखा। अब यह भड़काने वाला है, Exaggerated है, अतिशयोक्तिपूर्ण है। यह तो बात ठीक है- लेकिन उसमें कुछ सत्य का अंश होगा- जो सत्य होगा उसी को Exaggerate किया जा सकता है। शून्य को Exaggerate नहीं किया जा सकता। तो उन्होंने भड़काने के लिए जो लिखा वह भी आपको यह परिचय देगा कि वास्तव में हिन्दूकरण चल रहा था। एक कविता है बडी प्रसिद्ध है। पाकिस्तानियों में चलती थी- मूलत: उर्दू में है- अंग्रेजी में खुद इकबाल साहब ने उसका भाषान्तर किया है- नमूने के लिए दो एक चीजें आपके सामने रखता हूँ कि किस तरह से उनके भी मन में भय था यह आपको दिखाई देगा। वह कहते हैं-

From the British you have learnt your language

Your culture from the Hindus

How can Muslims Pass as a Nation

Who shame even the Jews,

In to the sky of your nation you rose

Like a bright star with a hue

But the lure of India’s idols has made

Even Brahmins out of you.

याने उनको यह कहना पड़ा कि यहाँ आने के बाद तुम ब्राह्मण होते जा रहे हो, क्या बात है। जो प्रक्रिया चल रही थी उसका परिचय इससे हमें मिल सकता है। ईसाइयों की भी यही बात है। आज भी ईसाई कार्डिनल जो हैं अर्नाकुलम के, उन्होंने स्पष्ट घोषित किया है हमारी संस्कृति हिन्दू है। यह प्रक्रिया पहले से जारी है और इसका ज्ञान ईसाई नेताओं को था, जो Religion के नेता थे। जॉन स्टैनले इस नाम के एक सुपरवाइजर, एक मिशन चर्च के, हिन्दुस्थान में, लखनऊ में रहे। उन्होंने Review करके एक किताब लिखी है। उसकी प्रस्तावना में वह कहते हैं कि मैं यहाँ आया और मैंने सोचा कि जरा Study करना चाहिए कि यह क्या है हिन्दू नाम की चीज। तो मुझे

बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योंकि हिन्दू में सब दिखे- एक तरफ ऐसे अनपढ़ अनाड़ी दिखते हैं जो भूत-प्रेत-पिशाच, वृक्ष-पाषाण की पूजा करते हैं। तो एक तरफ ऐसे विद्वान् दिखते हैं जो आत्मा-परमात्मा, ब्रह्म सत्य, जगत्मिथ्या की चर्चा करते हैं। तो यह है क्या? सभी हिन्दू हैं यह मेरे समझ में नहीं आया। लेकिन थोड़ी गहराई में जाकर जब मैंने अध्ययन किया तो मुझे पता चला कि यह बहुत खतरनाक बात है। उन्होंने अपने दृष्टिकोण से लिखा। उन्होंने कहा कि हिन्दू नाम की जो चीज है, बड़ी खतरनाक है। अपने बिशप लोगों को चेतावनी दी कि Beware of this octopus of Hinduism सावधान रहो हिन्दूइज्म के आक्टोपस से। आक्टोपस यह अष्टपद जलचर प्राणी है दक्षिण महासागर में मिलता है। इस प्राणी की यह विशेषता है कि मुँह में कुछ खाता नहीं है। उसका जो पोषण होता है वह ऐसा होता है कि अष्टपद प्राणी महासागर में संचार करता रहता है। और देखता है कि क्या कोई छोटा प्राणी ऐसा है जिसको खाया जा सकता है। ऐसा प्राणी दिखा तो उसके सर पर यह बैठ जाता है। इसका पेट बड़ा मुलायम होता है इसके कारण जिस प्राणी पर यह बैठता है वह इस पर चिपक जाता है। जैसे ही वह प्राणी इस पर चिपक जाता है यह अपने आठों पाँव समेट लेता है, और जब पाँव खुलते है तो वह प्राणी दिखाई नहीं देता है, क्योंकि मुलायम पेट के माध्यम से उसने उसको निगल लिया होता है। यह जो अष्टपद प्राणी है उसकी उपमा देते हुए उन्होंने कहा Beware of this octopus of Hinduism हिन्दुइज्म यह एक आक्टोपस है, इससे सावधान रहो। उन्होंने यह भी कहा कि यह हिन्दूइज्म एक दिन जीसस को भी आत्मसात कर ले सकता है। आत्मसात करने की दृष्टि से उनका यह कहना गलत नहीं है, क्योंकि जीसस को हमने आत्मसात् कर लिया। कोई चीज जीसस ने ऐसी नहीं कही जो हमारे द्रष्टाओं ने नहीं कही। इतना आत्मसात् कर लिया है कि गांधी जी को कुछ लोग क्रिश्चियन कहते थे। और गांधी जी अपने को सनातनी हिन्दू कहते थे।

हमारा दृष्टिकोण सर्व समावेश: सब का सब Assimilate करने का है- Synthesis का है।

## एकं सत् विप्रा: बहुधा वदन्ति

एक ईसाई मिशनरी, इसके पूर्व जो श्रंगेरी के शंकराचार्य थे श्री चन्द्रशेखर भारती, उनके पास गये और उनको कहा कि मैं आपके साथ शास्त्रार्थ करना चाहता हूँ। वे

बोले काहे के लिए? आपका हिन्दू धर्म अच्छा है कि हमारा क्रिश्चियन धर्म अच्छा है? भारती जी बोले कि दोनों एक ही हैं, शास्त्रार्थ की आवश्यकता ही क्या है? मतभेद होता है, तब शास्त्रार्थ होता है। आपका हमारा कोई मतभेद नहीं है। मिशनरी ने कहा कि नहीं मतभेद जरूर है, हम आपसे भिन्न हैं। तो उन्होंने कहा कि अच्छा भाई पूछो। तो उन्होंने पूछा कि हिन्दू Cosmology क्या है? उन्होंने कहा जो आपकी है। Cosmology याने विश्व का निर्माण कैसे हुआ वगैरह। तो बोले कि हमारी Cosmology हमें बताती है कि बाइबिल में कहा गया है कि "God said let there be light and there was light." भगवान् ने कहा प्रकाश हो और प्रकाश हो गया। शंकराचार्य ने कहा कि हमारे यहाँ भी यही कहा गया है। फर्क इतना ही है कि एक सत्य होते हुए भी- सत्य जिनको बताना था उनका स्तर अलग-अलग था- इसके कारण जो सुनने वाले लोग हैं उनकी समझदारी का स्तर ध्यान में रखते हुए- सत्य एक होते हुए भी- इसका विवरण अलग-अलग भाषा में करना पड़ा। यहाँ गाय का बहुत महत्त्व है। वहाँ ऊँट का महत्व बहुत है। जेरूशलम में Sheep का महत्व बहुत है। यहाँ गोपाल हुआ वहाँ शेफर्ड हुआ। बात एक ही है।। Cosmology एक ही है। लेकिन यह था कि जीसस ने जब कहा जेरुशलम के लोगों को "God said let there be light and there was light." तो लोगों का स्तर ऐसा था कि उन्होंने सुन लिया और मान लिया। अब हमारे देश में स्तर कुछ ऊँचा था। यहाँ विद्वान् लोग थे। वह प्रश्न पूछते हैं कि Why god said let there be light? तो उसका उत्तर देना चाहिए। हमारे यहाँ उसका उत्तर भी दिया गया है। 'स अकामयत् एकोऽहं बहुष्यामिति।' वह एक ही था। उसके मन में यह इच्छा हुई कि मैं एक हूँ अनेक होना चाहिए। Let me multiply myself एक ऐसी कामना उसके मन में निर्माण हुई। इसलिए उसने अपने को Multiply किया। अपने को अनेक करने की प्रक्रिया में पहले कहा Let there be light इसलिए Light हो गया। तो Cosmology में अन्तर नहीं है- लेकिन audiences का Level अलग-अलग था, इसलिए अलग-अलग भाषा का प्रयोग करना पड़ा। विवेकानन्द ने कहा कि सत्य एक है। भाषा केवल अलग-अलग है। हमारे यहाँ कहा गया है 'द्वैतवाद'। अब यह द्वैतवाद येरूशलम के लोग थोड़े ही समझ सकते हैं। अपने आध्यात्मिक प्रवास में जीसस ने कहा कि Glory be to thy name me Lord! बात

एक ही है। यहाँ उसको द्वैतवाद कहते हैं। हमारे यहाँ विशिष्टाद्वैत कहते है। आध्यात्मिक प्रवास के दूसरे चरण में उन्होंने कहा कि I am in my Father - I in you and you in me. बात एक ही है। यही विशिष्टाद्वैत है। अन्तिम चरण पर जब ईसा पहुँचे तो उन्होंने कहा कि I and my Father are one. I am the way to truth and light. यह तो भाषान्तर है, केवल इसका 'अहम् ब्रह्मास्मि तत्त्वमसि सर्वं खल्विदं ब्रह्म।' उनकी समझदारी छोटी थी, स्तर छोटा था इसी से उनको कहा कि I and my Father are one. तो एक ही सत्य है केवल उसका विशदीकरण अलग-अलग भाषा में करना पड़ा। चन्द्रशेखर भारती, शंकराचार्य ने जब यह कहा तो यह मिशनरी निरुत्तर होकर चले गये।

## हिन्दू एक जीवन दर्शन है

हिन्दू यह एक दर्शन है। यह जैसा कि कहा गया कि सनातन धर्म यह हिन्दू राष्ट्रीयत्व का दूसरा नाम है, क्योंकि हिन्दुस्तान में जिस समय राष्ट्रीयत्व का निर्माण हुआ उस समय विश्व संस्कृति और हिन्दू राष्ट्र यह एक ही थे। इसी के कारण 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की भाषा यहाँ बोली जा सकी। तो हिन्दू राष्ट्र और विश्व संस्कृति एक ही होने के कारण यहाँ की जो मनोवृत्ति है, मनोरचना है इसकी तुलना और किसी देश की मनोरचना के साथ नहीं हो सकती है, हमारे ऋषियों और द्रष्टाओं ने ऐसा मान लिया, अनुभव के आधार पर उन्होंने ऐसा दर्शन किया कि हर एक व्यक्ति का विकास होना चाहिए, उसकी चेतना का विकास होना चाहिए। किस क्रम से होना चाहिए तो उन्होंने कहा कि जब बच्चा पैदा होता है, बड़ा होता है उसे कुछ पता नहीं होता कि माँ क्या, बाप क्या तो वह स्वकेन्द्रित हुआ करता है। धीरे-धीरे वह बड़ा होता है और उसकी चेतना का विकास होता है। वह माँ, बाप, भाई, बहन को पहचानता है तो वह परिवार केन्द्रित हो जाता है तथा परिवार के साथ उसकी एकात्मता होती है। परिवार के सुख में सुख, परिवार के दुःख में दुःख यह एकात्मता उसकी हो जाती है और जब चेतना का विकास होता है तो अपने राष्ट्र के साथ, समाज के साथ व्यक्ति एकात्म होता है। राष्ट्र के सुख में सुख, राष्ट्र के दुःख में दुःख, इस प्रकार का विचार उसके मन में रहता है। अनुभव वह करता है, साक्षात्कार उसका होता है, और भी जब उसकी जागृति की चेतना का विकास होता है तो सम्पूर्ण मानव जाति के साथ वह एकात्म होता है और

कहीं भी मानव यदि दुःखी है तो मैं दुःखी हूँ- इस प्रकार का अनुभव वह करता है, साक्षात्कार वह करता है। और भी ऊपर जब चेतना का विकास होता है तो केवल मानव नहीं तो मानवेतर जीव दृष्टि के साथ भी मनुष्य एकात्म होता है, किसी भी प्राणीमात्र का चाहे वह जानवर रहे, किसी भी जीव सृष्टि की हिंसा से यदि दुःखी रहे तो वह उसके मन में प्रतिबिम्बित होता है। और भी उसकी चेतना का विकास होता है तो हमारे यहाँ यह माना गया कि वह संन्यासी होता है जिसके लिए कहा गया कि 'स्वदेशो भुवन त्रयं' यह भुवन त्रय जो है यह उसका स्वदेश है और वह अनुभव करता है कि मानव जाति जीवसृष्टि क्या, तो तथाकथित निर्जीव सृष्टि का भी वह एक अंग है। सम्पूर्ण अस्तित्व की वह एक इकाई है। हम सब उसके अंग हैं। 'अहं ब्रह्मास्मि', 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' मैं भी वही हूँ, आप भी वही हैं, सब कुछ वही है। इस तरह से मैं इस सम्पूर्ण अस्तित्व का एक अंशमात्र हूँ इस तरह का साक्षात्कार वह अनुभव करने लगता है तो व्यक्ति केन्द्रितता से लेकर चैतन्य केन्द्रितता तक जागृति का, चेतना का विकास होना चाहिए- यह बात हिन्दू द्रष्टाओं को अभिप्रेत है और उस दृष्टि से हिन्दू यह शब्द जितना व्यक्तित्ववादी है, परिवारवादी है, राष्ट्रवादी है, अन्तर्राष्ट्रवादी है, विश्ववादी है, चैतन्यवादी है अर्थात् जितना वह राष्ट्रीय, उतना अन्तर्राष्ट्रीय, उतना ही वह वैश्विक है। एज मच इन्टरनेशनल एज नेशनल ऐज मच यूनिवर्सल एज इन्टरनेशनल। हमारा संन्यासी सम्पूर्ण विश्व का नागरिक रहता है 'सिटिजन आफ युनिवर्स' रहता है, इस दृष्टि से चेतना का विकास होना चाहिए। और इस तरह के विकास से ही मनुष्य अन्तिम सुख को प्राप्त कर सकता है। घनीभूत सुख को, अखण्ड सुख को, चिरन्तन सुख को, जिसको टेक्नीकली हमने मोक्ष यह संज्ञा दी है, इस मोक्ष को वह प्राप्त कर सकता है, इस तरह का साक्षात्कार हमारे द्रष्टाओं ने किया था। इस जीवन मूल्य को मानकर चलने वाला जो है वह हिन्दू और ऐसे हिन्दुओं का राष्ट्र वह हिन्दू राष्ट्र और इस जीवन मूल्य को लेकर चलने वाले हिन्दू का आज हमारे यहाँ अधःपतन हुआ है- यह बात सही है। आज हमारी गिरी हुई अवस्था है- यह बात सही है। तो भी जो हमें विरासत, जो हमें लीगेसी प्राप्त हुई है, वह विरासत इतनी दिव्य और उदात्त है कि इसके कारण ही शायद अरनाल्ड टायन्बी को ऐसा लग सका कि पोटेन्शियल्टी इस राष्ट्र में है कि सम्पूर्ण संघर्षमय विश्व को सहयोगी सह-जीवन का एक मॉडल समाज निर्माण करते हुए मार्गदर्शन यह देश कर सकेगा, ऐसी आशा उनके मन में निर्माण हुई।

इसका कारण आज की हमारी यह अवस्था नहीं है यह स्पष्ट है, लेकिन यह जो एक दर्शन, विश्व दर्शन की विरासत, एक लीगेसी हमें यह मिली है, यह जो जीवन मूल्य हमने अपने पास रखा है, हो सकता है कि हम उस पर आज नहीं चल रहे, लेकिन जो जीवन मूल्य हमें मिला है इसी के कारण यह आशा शायद उस श्रेष्ठ इतिहासज्ञ के मन में निर्माण हुई होगी। ऐसा हम समझते हैं। तो यहाँ एक मॉडल समाज ऐसा निर्माण किया जाएगा जिसको देखकर बाकी दुनिया को स्वाभाविक ही सह-जीवन का सन्देश प्रत्यक्ष मॉडल को देखते हुए प्राप्त हो सकेगा, इस तरह की आशा हमारे बारे में है।

## हिन्दू और भारतीय- दोनों समानार्थक

आजकल यह झगड़ा बहुत चला है। कुछ राजनीतिक नेता वोटों के लालच में सुझाव दे रहे हैं कि हिन्दू शब्द छोड़ दो। भारतीय शब्द ले लो। हमने कहा कि भारतीय या हिन्दू बोलें दोनों एक ही हैं। समानार्थक हैं। हमने कहा कि हम तो मान सकते हैं कि दोनों समानार्थक हैं; अगर आप कहते हैं और अगर आप ईमानदारी से कह रहे हैं कि हिन्दू और भारतीय दोनों समानार्थक है तो फिर हिन्दू शब्द क्यों छोड़ दिया जाये, इसी को रखा जाये। है तो समानार्थक तो फिर छोड़ना क्यों? लेकिन कहते हैं कि नहीं, छोड़ना ही अच्छा। हमने कहा कि क्यों अच्छा? दोनों समानार्थक हैं फर्क क्या पड़ेगा? तो सीधी बात यह है कि आप ईमानदारी से यह बात नहीं कह रहे हैं कि 'हिन्दू' और 'भारतीय' समानार्थक हैं। आपके मन में हिन्दू का Phonotation अलग है। भारतीय का Phonotation अलग है। और आपके कहने के पीछे मन्तव्य यह है कि हिन्दू शब्द छोड़ने के कारण अहिन्दुओं का वोट प्राप्त करने में सहायता होगी। केवल Election Politics ध्यान में रखकर आप सत्य सिद्धान्त बेचने को तैयार हो। हमने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सत्य सिद्धान्त को बेचेगा नहीं; क्योंकि हम मतों के याचक नहीं। Beggers can not be choosers जो याचक है वह अपना Choice नहीं कर सकते, यह हम समझते हैं। But we are not beggers of the Votes. हम तो अपना सत्य सिद्धांत प्रतिपादित करते रहेंगे, बार-बार प्रतिपादित करते रहेंगे। और कोई भी सत्य है या असत्य है इसकी कसौटी Majority-Minority नहीं हो सकती। सिद्धांत की शक्ति उसकी सत्यता पर निर्भर है।

आप उदाहरण के लिए देखिए। एक समय था कि यूरोप के सारे लोग यह मानते थे कि पृथ्वी यह सारे विश्व का केन्द्र है और सूर्य पृथ्वी के पीछे चक्कर काटता है। उस समय एक वैज्ञानिक हुआ। उसने कहा नहीं। उन्होंने अन्वेषणपूर्वक यह सिद्ध किया कि पृथ्वी विश्व का केन्द्र नहीं तो सूर्य विश्व का केन्द्र है और पृथ्वी सूर्य के पीछे चक्कर काटती है। सारे यूरोप के लोग बौखला उठे। उन्होंने कहा कि यह पाखण्डी है। छोटी बात बोल रहा है। इसको मारना चाहिए। किसी ने कहा कि सूली पर चढ़ाना चाहिए। अब उस समय मतदान होता और कहते कि साहब यह शास्त्रज्ञ जो कहता है, उसके पक्ष में कितने हैं और शास्त्रज्ञ के विरोध में कितने हैं, तो यूरोप के सारे लोग उसके विरोध में वोट देते -And he would have been in the microscopic minority of one वह एक की Minority में आ जाता, किन्तु इसके कारण क्या Majority की जीत हो गयी? आज दुनिया किस सिद्धान्त को मान रही है। उस समय यूरोप की Majority जिस सिद्धान्त के साथ थी उस सिद्धान्त को नहीं मान रही। उस समय जो Microscopic minority of one में था, उसके सिद्धांत को दुनिया मान रही है। क्यों? Majority के आधार पर कोई सत्य सिद्ध नहीं हुआ करता, सत्य की अपनी निजी शक्ति हुआ करती है। तो हम जो कह रहे हैं यदि वह सत्य है तो उसकी निजी शक्ति है वह Majority-Minority के आधार पर तय नहीं हो सकता। और इसके कारण Election को ध्यान में रखते हुए जैसे चुनाव समझौते हुआ करते हैं वैसी यहाँ सत्य-सिद्धांत में लेन-देन नहीं हो सकती। सत्य सिद्धांत के बारे में समझौता नहीं हो सकता। तो हमने कहा कि हिन्दू-भारतीय एक है तो हिन्दू ही क्यों नहीं लेते? तो उन्होंने कहा कि नहीं, जरा लोग नहीं चाहते। हमने कहा कि लोग तो संघ को ही कहाँ चाहते हैं? १९२५ से मैं देख रहा हूँ कि हमेशा संघ के ऊपर टीका करने वाले लोग रहे। लोगों को खुश करने का हम धंधा उठायेंगे तो संघ को ही बन्द करना यही एकमात्र रास्ता रहेगा। तो लोगों को खुश करना हमारा धंधा नहीं है। लोगों को Educate करना, लोगों को संस्कार देना, लोगों को सही रास्ते पर लाना; जैसे छोटे बच्चे को होता है- वह समझता नहीं, उसकी हर एक बात आप मानते जाइए, उसके कहने के समान करते जायेंगे, कहां तक करेंगे। कभी-कभी उसका अनुनय करना पड़ेगा, कभी उसको चपत भी लगानी पड़ेगी। लेकिन उसको सत्य रास्ते पर तो लाना ही पड़ेगा। तो हम अनुनय करने वालों में से नहीं हैं, Appeasement करने वालों में से नहीं हैं। कितना मुसलमानों के

बारे में हमने कहा, उसका अर्थ यह नहीं है कि हम मुसलमानों का अनुनय करना चाहते हैं। क्यों? हम वोट के भिखारी नहीं हैं तो हमें Apeasement करने की आवश्यकता क्या? हम अपने सिद्धांत, सत्य सिद्धांत का प्रचार करेंगे- हमें विश्वास है कि आज नहीं तो कल यह मन्थरा जो है राजनैतिक Leaders दूर हो जायेंगे, ये निष्प्रभ हो जायेंगे। इनकी Creditiblity समाप्त हो जाएगी, तो यहाँ का मुसलमान समझेगा कि हिन्दू यह शब्द Religion वाचक नहीं, राष्ट्र का वाचक है; वह भी समझेगा। केवल इन मन्थराओं को कान पकड़ कर दूर करने की आवश्यकता है और वह भी करेंगे। तो इतना आत्मविश्वास होने के कारण हम समझौता काहे को करें। समझौते की कोई आवश्यकता नहीं। हम अहिन्दुओं का अनुनय भी करने वाले नहीं। उनको सीधे बताने वाले हैं कि इस राष्ट्र के आप अंग हैं, इस नाते आप समझेंगे, इसमें आपका कल्याण है। हम उन Political नेताओं के समान नहीं जो ५० प्रतिशत Marriage में विश्वास रखते हैं।

मैं कालेज में था तो एक Picture देखी थी। उसमें ऐसा था कि एक लड़का दिखने से भी अच्छा नहीं, बुद्धिमान भी नहीं, लेकिन Romantic था। इसलिए इधर-उधर प्रेम वगैरह करता था। लोग उसकी खिल्ली उड़ाते थे। एक दिन वह Hostel में आया और चार लडकों के सामने घोषित किया 'मेरा Marriage तय हुआ है।' सब बोले- अच्छा तुम्हारी शादी तय हो गयी, कैसे? तुम्हारे साथ कौन-सी लड़की शादी करेगी? पहले इसके कि वह तुम्हारे साथ शादी करे, वह गले में पत्थर वगैरह बाँधकर आत्महत्या नहीं कर लेगी? तो बोले कि यह शादी तय हुई है याने ५० प्रतिशत तय हुई है। पूछा गया कि ५० प्रतिशत माने क्या? तो बोले कि शादी में दो पार्टियाँ होती है न? एक लड़का और एक लड़की। उसमें से मैं एक पार्टी हूँ। मैंने तय कर लिया है कि मैं उसके साथ शादी करूँगा। तो ५० प्रतिशत तो मामला तय हो गया है, अब केवल ५० प्रतिशत ही बाकी है। इसी तरह से हिन्दू-मुसलमान एकता की जो बात करते हैं; वे कहते हैं कि ५० प्रतिशत एकता हो गयी है। अब ५० प्रतिशत ही बाकी बची है। यह ५० प्रतिशत Love affair में विश्वास रखने वाले हम Romantic लोग नहीं हैं। हम Realistic हैं, वास्तविकतावादी हैं, इस कारण हमें विश्वास है कि हम उन्हें समझायेंगे, अनुनय नहीं करेंगे, तोषण नीति स्वीकार नहीं करेंगे, appeasement नहीं करेंगे, सत्य का प्रतिपादन

केवल करेंगे और हमें विश्वास है कि वे सत्य समझ सकते हैं, आज नहीं समझेंगे- कल समझेंगे। सत्य वे समझ सकते हैं।

## हिन्दू दृष्टि- चराचर के साथ एकात्म

लेकिन मैंने कहा कि आप ये जो हिन्दू और भारतीय कह रहे हैं कि आप ऊपर-ऊपर से ही कह रहे हैं। कहते हैं कि हिन्दू यानी भारतीय, भारतीय याने हिन्दू; तो भी हिन्दू शब्द Drop करने का जो आपका कारण है अर्थात् हिन्दू शब्द, उसका Phonotation दूसरा कुछ होता है, भारतीय से भिन्न होता है, ऐसा आपको लगता है। कहा, हाँ! हाँ थोड़ा ऐसा ही है। हमने कहा, नहीं, बहुत ऐसा है। तो यह Phonotation अगर भिन्न है, तो इसकी चर्चा होनी चाहिए कि यह भिन्नता कहाँ है? हमारे भी मन में मित्रता आपके कारण आ रही है। हिन्दू और भारतीय एक है। हमें कहने में कोई आपत्ति नहीं। ऐसा यदि होगा तो हिन्दू शब्द Drop काहे को करना। लेकिन Drop करने वालों के मन में Phonotation क्या आता है? भारतीय से भिन्न Phonotation आता है उनके मन में। Phonotation यह आता है कि भारतीय कहने से प्रादेशिक राष्ट्रवाद, यह आ जाता है। तो उसमें सब लोग आ जायेंगे यानि सभी वोटर्स। उनके सिद्धांत से सम्बन्ध नहीं, वोटों से सम्बन्ध हैं। तो सभी वोटर भारतीय में आ जायेंगे हमसे खुश रहेंगे। और हमने हिन्दू कहा तो रूढ़ार्थ में जो हिन्दू हैं वो तो वोट देंगे; किन्तु राष्ट्रीयता और Religion और इसका सारा समझाना- तब तक तो Election भी निकल जाएगा। हम कहाँ तक समझायेंगे। Time कहाँ है? और इसके लिए काहे को समझाने की सारी झंझट करना, सत्य प्रतिपादन का काहे को झंझट करना, चुनाव जल्द आ रहा है, Compromise कर लो। तो हमने कहा कि आपके मन से Hindu का Phonotation है Something narrower than Bharatiye तो आप भारतीय को हिन्दू नहीं मानते। क्योंकि भारतीय को प्रादेशिक राष्ट्र मान रहे हैं। मैं हिन्दू हूँ इसके कारण Territorial Nationalism तक सीमित नहीं रह सकता। वास्तव में भारतीय शब्द हिन्दू में समव्याप्त। होने में हमारी ओर से कोई आपत्ति नहीं, लेकिन आप उसको Territorial Nationalism तक सीमित रखना चाहते है। आपका Phonotation है Territorail Nationalism याने इस भारतवर्ष की जो प्रादेशिक राष्ट्रीयत्व है वही आप मान रहे हैं। और मैं यदि सच्चा हिन्दू हूँ और मैं यदि कल संन्यासी बन जाता हूँ और संन्यासी के

लिए कहा गया कि "स्वदेशो भुवनत्रय" वह किसी एक राष्ट्र का नहीं, सारा भुवनत्रय उसका हो जाता है। वह World Citizen बनता है, सारी दुनिया का नागरिक बन जाता है। और यदि आपके भारतीयत्व में मैं आता हूँ तो मैं World Citizen कैसे बनूँगा? प्रादेशिक राष्ट्रीयत्व से ऊपर उठकर संन्यासी बन संपूर्ण चराचर अस्तित्व के साथ मैं एकात्म होना चाहता हूँ। आपके राष्ट्रवाद की चौखट में मैं रहा तो चराचर के साथ मैं कैसे एकात्म हो सकता हूँ। मुझे तो आपकी यह चौखट में ही रहना पड़ेगा।

## मनुष्य के विकास का क्रम- याने हिन्दुत्व

हिन्दू विभिन्न स्तर पर विभित्र बातों के साथ Identified है। एक स्तर पर व्यक्ति के साथ Identified है, एक स्तर पर परिवार के साथ Identified, एक स्तर पर राष्ट्र के साथ Identified है, एक स्तर पर मानवता के साथ Identified, एक स्तर पर चराचर विश्व के साथ Identified. यह मनुष्य के जागृति के विकास का ग्राम याने हिन्दुत्व है। जो आप हमारे विकास का क्रम रोक देंगे, हमको कहेंगे कि संन्यास मत लेना। मानव जाति का एक सदस्य मत बनना। चराचर अस्तित्व के साथ एकात्म मत बनना। क्योंकि मेरा वोट निकल जायगा। यह कैसे हो सकता है? तो प्रादेशिक राष्ट्रवाद की चौखट में हिन्दू बैठ नहीं सकता। हाँ, यह बात ठीक है कि जो जागृति के विकास का क्रम है वह Exclusive नहीं Inclusive है। Exclusive का मतलब होता है कि यदि मैं परिवार के साथ एकात्म हूँ तो मेरा अपने से प्रेम नहीं। मैं समाज के साथ प्रेम करता हूँ तो परिवार से घृणा करता हूँ। ऐसा नहीं। Inclusive है, माने जब मेरी जागृति का विकास परिवार तक होता है तो मैं परिवार से प्रेम करता हूँ, अपने से भी करता हूँ। समाज से प्रेम करता हूँ, परिवार से भी प्रेम करता हूँ। मानव जाति से प्रेम करता हूँ, राष्ट्र से भी प्रेम करता हूँ। चराचर विश्व के साथ एकात्म हूँ, राष्ट्र के साथ भी एकात्म हूँ। Inclusive है, Exclusive नहीं है। यह तो ऐसे विकास का क्रम है जैसे बीज, अंकुर, पौधा, शाखा उसके पत्ते होते हैं, फूल और फल होते हैं। विकास का क्रम एक-दूसरे के खिलाफ नहीं है। अब यह विकास का क्रम आपके Territorial Nationalism के कारण आपको रोकने का क्या अधिकार है; तो हिन्दू और भारतीय यदि एक हैं तो हिन्दू ही रखा जाए। और यदि Phonotation में अन्तर है, तो वह नहीं है जो आप समझते हैं, याने हिन्दू संकीर्ण है और भारतीय विस्तृत है यह मानना ठीक नहीं।

Phonotation यह है कि हिन्दू अति विस्तृत है, सबका समावेश कर लेने वाला है। भारतीय में सबका समावेश नहीं है। और इसके कारण हम भारतीय शब्द लेकर हिन्दू को कैसे छोड़ सकते हैं।

### राष्ट्र-कल्पना को ठीक समझें

तो राष्ट्र कल्पना जो है, हिन्दू शब्द जो है इसको ठीक से समझना चाहिए। हिन्दू राष्ट्र का मतलब यह होता है कि जो हिन्दू जीवन पद्धति को, हिन्दू संस्कृति को स्वीकार किये हुए लोग हैं, उनका है। Religion जो कुछ भी रहे, उपासना पद्धति जो कुछ भी रहे, हिन्दू जीवन पद्धति, हिन्दू संस्कृति जिन्होंने स्वीकार की है वे इस विकास क्रम में विश्वास रखते हैं। व्यक्ति से ब्रह्माण्ड तक विकास क्रम है। जागृति का, इसमें विश्वास रखते हैं। इसमें विश्वास रखने वाले हैं हम। हो सकता है कि मेरी आज वह क्षमता न हो। मैं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के साथ एक नहीं हो सकता जैसे शंकराचार्य हो सकते थे; किन्तु मेरी मान्यता है, मेरा Ideological faith है कि सम्पूर्ण चराचर एक है। इस मान्यता के साथ Territorial Nationalism मेल नहीं खा सकता। यह जाग्रति का विकास क्रम जिन्होंने मान लिया है ऐसे लोगों का राष्ट्र याने यह हिन्दू राष्ट्र। इसका पूरा विचार हम करें। 'हिन्दू' शब्द को समझ लें। 'राष्ट्र' शब्द को समझ लें।

## परम् वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रम्

### राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का ध्येय

हम लोगों ने यह भी सोचा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का ध्येय क्या है? हमारी प्रार्थना में स्पष्ट रूप से यह बताया है कि ध्येय क्या है, साध्य क्या है, साधन क्या है। कहा गया कि 'परं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रम्' - इस हिन्दू राष्ट्र को परम वैभव तक ले जाना यह हमारा ध्येय है। यह ध्येय कैसे प्राप्त हो सकता है, तो कहा कि परम वैभव की शर्त है,

एक प्रीकन्डीशन है, 'विधायास्य धर्मस्य संरक्षणम्' - सनातन धर्म की रक्षा करते हुए हिन्दू राष्ट्र को परम वैभव तक ले जाना। सनातन धर्म की रक्षा कैसे हो सकती है, तो उसका आधार बताया कि 'विजेत्री च न: संहता कार्यशक्तिर्' - हमारी विजयशालिनी कार्यशक्ति, संगठित कार्यशक्ति अर्थात् सम्पूर्ण हिन्दू समाज का संगठन यह आधार तथा उसके फलस्वरूप धर्म की रक्षा उसका स्वाभाविक परिणाम राष्ट्र का परमवैभव, यह साध्य-साधन विवेक हमारी प्रार्थना में दिया है और उसके अनुरूप सम्पूर्ण हिन्दू राष्ट्र को सुसंगठित करने का प्रयास राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने चलाया। संघ समाज के अन्तर्गत, संगठन खड़ा करना नहीं चाहता, तो सम्पूर्ण समाज को, सम्पूर्ण राष्ट्र को ही सुसंगठित अवस्था में लाना चाहता है। समाज के अन्तर्गत, राष्ट्र के अन्तर्गत जितने भी पंथ सम्प्रदाय होंगे, सभी पंथ सम्प्रदायों के साथ, जितने भी दल होंगे, सभी दलों के साथ, जितने भी मत-मतान्तर होंगे, सभी मत-मतान्तरों के साथ सम्पूर्ण हिन्दू राष्ट्र, सम्पूर्ण हिन्दू समाज माने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, यह हमारी धारणा है। और उस दृष्टि से 'कन्सेप्चुअली' (Conceptually) परिकल्पना के नाते संघ और समाज दोनों समान व्याप्त हैं। संघ कोएक्जिस्टिंग विद द एन्टायर सोसायटी (Sungh coexisting with the Entire society.) और मनोविज्ञान की दृष्टि से, Psychologically संघ समाज के साथ एकात्म है। संघ आईडेन्टीफाइड विद द एन्टायर सोसायटी (sungh Identified with the entire society.) इस तरह से संघ और समाज दोनों समव्याप्त और एकात्म हैं ऐसा हम मानते हैं। हाँ, जिनके मन के ऊपर यह एकात्मता का संस्कार कुछ हुआ है, वह संघ स्थान पर पहुँच गये थे, हमारे एक्टिव स्वयंसेवक दिखाई देते हैं। जिनके ऊपर यह एकात्मता का संस्कार नहीं हुआ वह संघ स्थान पर नहीं दिखाई देते- वह बाहर हैं तथा हो सकता है कि उनमें से कुछ विरोध भी करते हों तो भी सभी के बारे में हमारी धारणा यही है कि जो भी हिन्दू राष्ट्र का अंग है वह हमारा स्वयंसेवक है। आने वाले ऐक्चुअल स्वयंसेवक हैं, न आने वाले पोटेन्शियल स्वयंसेवक हैं और यद्यपि न आने वाले कुछ लोग गलतफहमी के कारण विरोध करते होंगे तो भी 'कुपुत्रो जायते क्वचितपि कुमाता न भवति'- इस न्याय से उनके विषय में भी हमारे मन में कोई कटुता की भावना नहीं। हम इतना ही समझते हैं कि बच्चे हैं, बात को समझ नहीं पा रहे हैं। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों वे बात को समझने वाले हैं- इस विश्वास के साथ संघ अपना संगठन का कार्य चला रहा है।

## संगठन का अर्थ

तो सम्पूर्ण समाज का संगठन, संगठन शब्द से हमारा मतलब यह है कि हर एक व्यक्ति के हृदय में सम्पूर्ण समाज के साथ एकात्मता का भाव अंकित करना। मैं अलग नहीं, पृथक् नहीं, स्वतन्त्र नहीं, सम्पूर्ण समाज के साथ मेरा वही सम्बन्ध है जो एक-एक अवयव का सम्पूर्ण शरीर के साथ सम्बन्ध हुआ करता है। इस तरह से हर एक व्यक्ति अपने क्षुद्र अहम् को भूल जाये और बड़े विचार में वह एकात्म हो जाये। आलम्बन के लिए सबसे सुविधाजनक इकाई राष्ट्र है, इसलिए आज हम राष्ट्रीय स्तर पर विचार कर रहे हैं। इस राष्ट्रीय स्तर का आलम्बन का आधार लेते हुए व्यक्ति यदि अपने अहम को भूल जाता है तो जो हिन्दू परम्परा है उसके अनुसार अहम् को भूलने वाला व्यक्ति जहाँ परिवार और समाज के साथ एकात्म होता है, राष्ट्र के साथ एकात्म होता है, वहाँ अहम् भूल जाने के कारण वह मानवता के साथ और सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ एकात्म हो सकता है, किन्तु अहम् को सम्पूर्ण रूप से विलोप करना, यह संस्कार दिन-प्रतिदिन एकत्रित आते हुए सामूहिक कार्यक्रम के माध्यम से सामूहिक मन के निर्माण से होता है। समष्टिगत कार्यक्रम के माध्यम से समष्टिगत भाव का निर्माण होता है। इस मनोविज्ञान के सिद्धांत के आधार पर जो कार्य पद्धति की रचना की गयी- इस कार्य पद्धति के आधार पर सम्पूर्ण समाज को सुसंगठित करने का प्रयास माने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है। और हमारा यह विश्वास है कि इस प्रकार से सम्पूर्ण समाज के साथ एकात्मता का संस्कार जिन व्यक्तियों के हृदय पर अंकित हुआ है, ऐसे व्यक्तियों का अनुशासन बद्ध संगठन आसेतु हिमाचल खड़ा करना यही राष्ट्र के परमवैभव का आधार हो सकता है।

## समाज की सम्यक् धारणा जिस रचना से हो सकती है वह स्वीकार्य

आज हम ऐसा देखते हैं कि अपने देश में हर एक आदमी कुछ-न-कुछ परिवर्तन होना चाहिए, यह बात तो करेगा। कोई सुधार की बात करेगा, कोई क्रान्ति की बात करता है। ज्यादा रोमान्टिक रहा तो समग्र क्रान्ति की भी बात करता है। बात करता है, पर करता क्या है? यह बात अलग है परन्तु तरह-तरह के शब्दों का प्रयोग किया जाता है। अब यह तो स्पष्ट है कि समाज का पुनर्जीवन होना चाहिए। आज जो हालत है, बहुत खराब है। इसमें से जीवन के हर एक क्षेत्र में समाज आगे बढ़ना चाहिए। भौतिक दृष्टि

से, आध्यात्मिक दृष्टि से, शिक्षा की दृष्टि से, आर्थिक दृष्टि से, सामाजिक-राजनैतिक दृष्टि से हर एक दृष्टि से राष्ट्र की पुनर्रचना होनी चाहिए, यह सभी को अभिप्रेत है और उस दृष्टि से जो ज्यादा रियलिस्टिक Realistic हैं वे रेनेशेन्स Reinessence शब्द का प्रयोग करते हैं। रोमान्टिक, रिवाल्यूशन शब्द का प्रयोग करते हैं। परन्तु शायद दोनों का अभिप्रेत एक ही है कि राष्ट्र का पुनर्निर्माण होना चाहिए। जीवन के हर क्षेत्र में पुनर्रचना होनी चाहिए। यह पुनर्रचना कैसी हो, इसके विषय में चर्चा चल सकती है। और जो हिन्दू सिद्धान्त को लेकर चलते हैं उनको सनातन धर्म के आधार पर सनातन धर्म के प्रकाश में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक किसी भी क्षेत्र में कोई भी रचना स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं, क्योंकि धर्म का उद्देश्य है सम्पूर्ण समाज की सम्यक् धारणा। जिस रचना से धारणा हो सकती है, उस रचना को हम हर एक क्षेत्र में ले सकते हैं। जैसे राजनीतिक दृष्टि से सोचा जाय तो हमारे यहाँ तरह-तरह की शासन प्रणालियाँ रहीं। अपने देवमन्त्र-पुष्पांजलि में आता है 'ऊँ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वराज्य वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयम्' - यह सब अलग-अलग प्रकार की शासन प्रणालियाँ (Form of governments) हैं, इसमें और भी एडीशन्स Additions हो सकते हैं, उसमें कोई आपत्ति नहीं। यही एक शासन प्रणाली होना चाहिए- इस प्रकार का रेजीमेन्टेशन Regimentation अपने यहाँ नहीं। उससे समाज की सम्यक् धारणा के लिए वायुमण्डल निर्माण होता है कि नहीं- यही एक कसौटी है। तरह-तरह की शासन प्रणालियाँ हमें चल सकती हैं। अर्थरचना में भी हमारे यहाँ समय-समय पर परिवर्तन हुआ। जब उत्पादन के साधन बहुत थोड़े थे उस समय अर्थरचना बिलकुल अलग थी। जैसे-जैसे उत्पादन के साधन बढ़ते गये, ज्यादा होते गये, वैसे-वैसे समाज की आर्थिक रचना बदलती गयी। आज भी जब टेक्नालोजी विकसित होती है उसके कारण उत्पादन के साधन में परिवर्तन होता है तो उसमें भी परिस्थिति के अनुकूल, समय के अनुकूल चाहे जो परिवर्तन करने में हमें कोई आपत्ति नहीं, केवल एक बात देखनी पड़ेगी कि इसके कारण समाज की धारणा होनी चाहिए, समाज का विघटन नहीं होना चाहिए। यह एक परख रखते हुए कोई भी आर्थिक रचना लेने में हमें कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

## अपरिवर्तनीय शाश्वत सिद्धांतों के प्रकाश में परिवर्तनशील समाज रचना

इस तरह से सामाजिक क्षेत्र में, सांस्कृतिक क्षेत्र में, हर एक क्षेत्र में हमारे यहाँ हमेशा परिवर्तन होते गये, क्योंकि धर्म, सनातन-धर्म का इस अर्थ में विचार होता है कि अपरिवर्तनीय शाश्वत सिद्धान्त, जिसका दर्शन हमारे द्रष्टाओं ने किया था। जो युनिवर्सल लॉज (Universal Laws) हैं, ये अपरिवर्तनीय हैं। लेकिन उनके प्रकाश में समाज में जैसे-जैसे परिस्थितियाँ बदलती जायेंगी, वैसे-वैसे समाज की रचना में, नियमों में बदल करना अर्थात् परिवर्तनशील समाज रचना का होना। अपरिर्वतनीय शाश्वत सिद्धान्तों (Universal Laws) के प्रकाश में परिवर्तनशील समाज रचना दोनों को मिलाकर धर्म यह संज्ञा कुछ अव्यक्त या आश्चर्यजनक बात मालूम होती है, लेकिन यह कोई आश्चर्य की बात नहीं, एक उदाहरण के लिए छोटी-सी बात कहूँगा। जैसे यह एक नियम है कि स्त्री-पुरुष सम्बन्ध में नैतिकता होनी चाहिए। नैतिकता यदि नहीं रहेगी तो सम्पूर्ण समाज विघटित हो जायेगा, यह युनिवर्सल लॉ है। किन्तु स्त्री-पुरुष सम्बन्ध के, विवाह के नियम क्या रहे? एक पुरुष एक स्त्री रहे, एक पुरुष अधिक स्त्री रहे, अधिक पुरुष एक स्त्री रहे, यह जो बात है वह परिवर्तनशील है। किसी भी समय समाज में मेल-फीमेल Male-Female ratio क्या है यह इस बात पर अवलम्बित है। समाज में यदि सत्तर प्रतिशत पुरुष एवं तीस प्रतिशत स्त्री हैं तो एक पत्नी-व्रत का विचार करना पड़ेगा या द्विभार्या प्रतिबन्ध का कानून बनाना पड़ेगा। लेकिन यदि तीस प्रतिशत पुरुष और सत्तर प्रतिशत स्त्रीयां हो गयीं तो एक पत्नी व्रत की बात करना या द्विभार्या प्रतिबन्ध की बात करना यह भी समाज को विघटित करने वाली बात होगी। क्योंकि एक स्थिति में कई पुरुष खाली रह जायेंगे और दूसरी स्थिति में कई महिलाएँ खाली रह जायेंगी। तो विवाह के नियम क्या हों- यह परिवर्तनशील बात है, लेकिन आधारभूत सिद्धांत जिसके प्रकाश में नियम बनाना, यह युनिवर्सल लॉ या शाश्वत सिद्धांत की नैतिकता रहनी चाहिए- यह अपरिवर्तनीय है। इस तरह अपरिवर्तनीय शाश्वत नियम के प्रकाश में परिवर्तनशील समाज रचना यह हमारे यहाँ अभिप्रेत है। और इसी कारण हमारे यहाँ कहा गया कि ‘तर्को प्रतिष्ठा श्रुतयो विभिन्ना:। नैको मुनिर्यस्य गत: प्रमाणम्।।’ अलग-अलग समय अलग-अलग बातें कही गयी हैं। केवल एक ही बात को हमने हमेशा के लिए प्रमाण नहीं माना, यह कहा गया। हर एक विषय

में इतनी स्वतंत्रता दी गयी है कि भगवान् बुद्ध के महानिर्वाण के पहले जब उनके शिष्य उनके पास एकत्रित आये और सबको यह पता चला कि महानिर्वाण होने वाला है और जब कहा गया कि महाराज! आप अपना उत्तराधिकारी (सक्सेसर) नियुक्त करिये तो उन्होंने इंकार किया और कहा कि उत्तराधिकारी नियुक्त करने का यह परिणाम होगा कि फिर उसी के कहने को प्रमाण मानकर आपको चलना होगा। मैं यह चाहता हूँ- और इसी कारण से बुद्धिज्म को रिलिजन आफ रैशनलिज्म Buddism is Religion of Rationalism कहा गया कि आप में से हर एक अपने लिए दीपक का काम करे, अपनी ही बुद्धि के प्रकाश में आगे रास्ता खोजें। इतनी स्वतंत्रता का विचार अपने यहाँ किया गया है। तो इस दृष्टि से अपरिवर्तनीय शाश्वत नियम और उसके प्रकाश में परिवर्तनशील समाज रचना होने के कारण किसी भी तरह की रचना लाने में हमें आपत्ति नहीं। कुछ कम ज्यादा होगा तो उसको हम एडजेस्ट कर सकते हैं।

## समाज के स्थायित्व का आधार संस्कार

लेकिन जो रचना होगी उसको स्थायित्व कैसे आ सकता है? इसके विषय में जितना बारीकी से विचार हिन्दू द्रष्टाओं ने किया उतना पश्चिम के लोगों ने किया नहीं और इसके कारण यहाँ जैसा स्थायी समाज निर्माण हो सकता है वैसा पश्चिम में नहीं हो सकता है। हमारे यहाँ यह माना गया कि आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक रचना भिन्न-भिन्न परिस्थिति के अनुकूल हो सकती है, लेकिन समाज के स्थायित्व का आधार क्या है? तो हर एक व्यक्ति के हृदय पर जो संस्कार अंकित किया जाता है कि मैं अलग नहीं हूँ। इस समष्टि का मैं एक अंग हूँ। यह जो एक समष्टि का संस्कार अंकित किया जाता है, इस संस्कार के आधार पर हर एक व्यक्ति समाज-समर्पित होकर चलता है। इसके कारण समाज स्थायित्व को धारण करता है। संस्कारों का महत्त्व है। बाकी रचनाएँ तो परिवर्तनशील हैं। संस्कारों का अतीव महत्त्व हमारे यहाँ माना गया है और उसके कारण संस्कारों की ऐसी शृंखला हमारे यहाँ निर्माण हुई कि मनुष्य के निर्माण के पहले से लेकर मनुष्य की मृत्यु के पश्चात् तक संस्कारों की श्रंखला चलती थी और उन संस्कारों की शृंखला के कारण हर एक व्यक्ति समाज-समर्पित संस्कार ग्रहण करता था।

ऐसे समाज समर्पित व्यक्ति होने के कारण बाह्य रचना कैसी भी हो किन्तु समाज में स्थायित्व था, यह हजारों साल का हमारा इतिहास बताता है। यह बात ठीक है कि पिछले बारह सौ साल में हम लोग चूंकि परायों, आक्रामकों के खिलाफ जीवन-मरण संग्राम में रत थे इसके कारण वह संस्कारों की शृंखला टूट गयी। समाज में तरह-तरह की विकृतियों, परिवर्तन, पथभ्रष्टता आदि विकार निर्माण हुए। हमारा जो मूलत: स्वभाव था, उसे हम भूल गये। बारह सौ वर्षों का जो यह कालखण्ड है इसमें यह तय हुआ। किन्तु मूल प्रकृति जो हमारी है वह संस्कार की है और इन संस्कारों के आधार पर ही समाज स्थायी हो सकता है- यह साक्षात्कार हिन्दू द्रष्टाओं का था।

## पश्चिम का विचार

जितने पश्चिम के विचारक हैं, पश्चिम में तरह-तरह की विचारधाराएँ होंगी, तरह-तरह के इज्म Isms होंगे, उनके आपस में भेद होंगे, आपस में विरोध होंगे, संघर्ष होंगे, लेकिन पश्चिम के सब इज्म के अन्तर्गत एक विचार कॉमन Common है। और वह विचार है कि मनुष्य के मन का अलग महत्त्व नहीं। जो सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियाँ हम निर्माण करेंगे, उसके फलस्वरूप मनुष्य का मन कण्डीशन्ड Conditioned होगा। मनुष्य का मन अपने आप तदनुकूल हो जायेगा। मनुष्य के मन पर संस्कार देने की अलग योजना की कोई आवश्यकता नहीं, केवल हमने क्रान्ति कर दी, राज्य रचना बदल दी, समाज रचना बदल दी, इतना ही पर्याप्त है। यह सबका एक कॉमन Common विचार है कि बाह्य परिस्थिति के कारण सबका मन बनता है। मनुष्य के मन के कारण बाह्य परिस्थिति बनती है, यह विचार नहीं। हमारे यहाँ माना गया कि जैसे बाह्य परिस्थिति का परिणाम मनुष्य के मन पर होता है वैसे ही मनुष्य के मन का परिणाम बाह्य परिस्थिति पर होता है, लेकिन दोनों में निर्णायक Deciding factor संस्कारित मनुष्य का मन है। मन को सुसंस्कारित नहीं किया तो स्थायी समाज निर्माण नहीं हो सकता, ऐसा स्पष्ट विचार हमारे यहाँ है। इसके विपरीत उतना ही स्पष्ट विचार पश्चिम का है कि मनुष्य के मन का अलग महत्व नहीं है। मैटर इज बेसिक Matter is basic, तथा Mind उसके ऊपर सुपरस्ट्रक्चर Superstructure है। इसके कारण आर्थिक, सामाजिक रचनाएँ यह बेसिक है। कला-साहित्य, शास्त्र, नीतिशास्त्र, रिलिजन यह जो सारी मन की उत्पत्ति है यह सुपर स्ट्रक्चर है जैसा मैटर होगा वैसा

माइण्ड होगा, जैसी सामाजिक आर्थिक रचना होगी वैसी ही कला, साहित्य, शास्त्र, नीतिशास्त्र आदि निर्माण होंगे यह पश्चिम का विचार रहा।

## सत्ता से परिवर्तन नहीं

पश्चिम का विचार और हिन्दू विचार इसमें यह मौलिक अन्तर है और इसके कारण पश्चिम में भौतिकता प्रधान होने के कारण भौतिक सत्ता को महत्त्व दिया गया और सोचा गया कि जो उपयुक्त परिवर्तन हम लाना चाहते हैं वह सारे उपयुक्त परिवर्तन हम सत्ता के आधार पर लायेंगे। पश्चिम में यह विचार आने के कारण हमारे मन में भी यह विचार आया। पश्चिम का अन्धानुकरण करना यही प्रगतिशीलता मानने वाले हमारे हिन्दुओं में भी कुछ यह विचार आया कि सत्ता के आधार पर परिवर्तन हो सकता है। आज हम यह कहने की परिस्थिति में हैं कि इसके कई प्रयोग वहाँ हो चुके हैं।

## कम्युनिस्ट देशों की कहानी

आज जिसे मार्क्सवाद Marxism कहा जाता है शायद बीस साल पहले यह चर्चा एकेडिमिक लेवेल Academic level पर होती, आज प्रत्यक्ष उदाहरण कई देशों में कम्युनिस्टों के चल रहे शासन का है, वहाँ का उदाहरण हम देखते हैं। कम्यूनिस्टों के हाथ में सत्ता आयी यह बात सही है। लेकिन एक भी कम्यूनिस्ट देश में कम्युनिज्म के मार्गदर्शक सिद्धान्तों पर अमल करना उनके लिए संभव नहीं हुआ। न तो वे विवाह संस्था को तोड़ सके जो उनका सिद्धान्त था, न तो वे परिवार संस्था को तोड़कर स्थायित्व दे सके जो कि उनका सिद्धान्त था, न तो वे प्रायवेट प्रॉपर्टी Private property को पूरी तरह अबॉलिश Abolish कर सके जो कि उनका सिद्धान्त था। रिलिजन के खिलाफ तो उन्होंने जेहाद ही छेड़ दिया था। १९३२ में रूस ने जो पंचवार्षिक योजना बनायी Five year plan उसमें उन्होंने योजना बतायी थी कि १९३६ में हम सब चर्चेस बन्द कर डालेंगे और १९३७ में उसमें लिखा गया था- गॉड विल बी एक्सपेल्ड फ्रॉम रशिया God will be expelled from Russia. भगवान् को रूस से एक्सपेल (निर्वासित) करेंगे। लेकिन ढ़ाई साल पहले रशिया की और चाइना की जो Constitution बनी, वहाँ तो गॉड को एक्सपेल करने की बात तो दूर रही उसमें फण्डामेन्टल राइट Fundamental Right में फ्रीडम आफ रिलिजन Freedom of religion का समावेश किया गया है। तो वे रिलिजन का कहाँ तक पराजय कर

सके? आजकल जो कैथोलिक चर्चेस के पोप हैं उन्होंने अपने मातृदेश पोलैण्ड जो एक कम्यूनिस्ट देश है, को विजिट Visit दी। ६ करोड़ की जो जनसंख्या है पोलैण्ड की। उसमें साढ़े तीन करोड़ लोग पोप साहब का दर्शन करने आये। उनका होम टाउन सैटो जहाँ उन्होंने सामुदायिक प्रार्थना की, दस लाख के ऊपर लोग वहाँ उपस्थित थे और कम्युनिस्ट भूमि पर खड़े रहते हुए पोप साहब ने यह घोषणा की कि मार्क्स का जो वह सिद्धान्त है कि मनुष्य केवल आर्थिक प्राणी है और उत्पादन के साधन के रूप में ही उसकी उपयोगिता है, इस सिद्धान्त का मैं तीव्र निषेध करता हूँ। ऐसी घोषणा कम्यूनिस्ट भूमि पर खड़े रहते हुए पोप साहब ने की। कहाँ तक रिलिजन पीछे हट रहा है यह कम्यूनिस्ट देशों में हम देख सकते है। मार्क्स ने कहा था कि वर्कर्स आफ द वर्ल्ड यूनाइट Workers of the world unite कि सारी दुनिया के मजदूरों को हम एक करेंगे। यूनीसेन्टर्ड कम्यूनिस्ट Unicentered Communist एक केन्द्रित कम्यूनिस्ट समाज सम्पूर्ण जगत में होगा ऐसा सोचा था। आज हम देख रहे हैं कि हर एक कम्युनिस्ट पार्टी की अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना समाप्त हो गयी। अब उनका अपनी राष्ट्रीय संस्कृति और परम्परा के साथ अपने को जोड़ने का प्रयत्न चल रहा है और इतना ही नहीं तो अपने राष्ट्रीय हित के लिए जिन देशों में कम्युनिस्टों का शासन है, वे कम्यूनिस्ट देश अपने राष्ट्रीय हित के लिए दूसरे कम्युनिस्ट देशों के खिलाफ जा रहे हैं- यह दृश्य हम देखते हैं। यूगोस्लाविया और रशिया का झगड़ा, रशिया और चाइना आपस में झगड़ते हैं, चाइना और वियतनाम आपस में झगड़ते है, वियतनाम और कम्बोडिया आपस में झगड़ रहे हैं। आपस में झगड़ने वाले ये सब कम्यूनिस्ट राष्ट्र हैं इतना ही नहीं तो चाइना अपने राष्ट्रीय स्वार्थ की दृष्टि से यद्यपि चाइना भी कम्युनिस्ट और रशिया भी कम्युनिस्ट- तो भी कम्युनिस्ट चाइना, कम्युनिस्ट रशिया के विरूद्ध अमेरिका के कदम से कदम मिला रहा है यह दृश्य हम देख रहे हैं। हम नेशनलिज्म Nationalism को खत्म करेंगे यह जो कहा था, वह जो उनकी प्रतिज्ञा थी आज पूरी नहीं हुई। कम्यूनिस्ट देश एक-दूसरे से लड़ रहे हैं। अन्तर्गत व्यवस्था में भी कहीं वे मार्गदर्शक सिद्धान्तों पर अमल नहीं कर सके। कम्यूनिस्ट जगत् की दो किताबों में, एक का नाम है द न्यू क्लास 'The New Class', दूसरी का नाम है 'Imperfect Society' इम्परफेक्ट सोसायटी, यह स्पष्ट रूप से कहा कि हमने पुराने वर्गों को नष्ट किया लेकिन वर्गहीन समाज रचना नहीं कर सके। पुराने वर्ग नष्ट हुए लेकिन नये वर्ग

फिर से निर्माण हुए हैं और उसी तरह से प्रिविलेजेल (Priviledges) जैसे पहले थे उसी तरह के प्रिविलेजेज का हम अनुगमन कर रहे हैं। माओत्सेतुंग जो एक श्रेष्ठ विचारक लेनिन के बाद कम्युनिस्ट जगत् में हो गया, उसने तो इससे भी अधिक स्पष्ट इसका विश्लेषण किया। उसने कहा कि हम कुछ सिद्धांतों को लेकर क्रान्ति के लिए तैयार हो गये। १९४८ में चाइना में क्रान्ति हुई और जो क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट थे वह शासक बन गये, लेकिन शासन हाथ में आने के पश्चात् उनकी मनोवृत्ति में परिवर्तन होता गया तथा शासन के कारण जो सारे प्रिविलेजेज प्राप्त होते गये वे हमारे हाथ में ही रहें, इसके कारण शासन में बने रहने की प्रवृत्ति निर्माण हुई और उसके कारण क्रान्ति का रथ यदि आगे बढ़ता है तो हमारी मोनोपोली Monopoly समाप्त होगी, यह सोचकर क्रान्ति के रथ में बाधा डालने की प्रवृत्ति निर्माण हुई और उसके परिणामस्वरूप कल के क्रान्तिकारी आज के प्रतिक्रान्तिकारी बन गये, ऐसा उन्होंने कहा Yesterday's revolutaionaries are today's counter revolutionaries और इसके कारण जो सांस्कृतिक क्रान्ति उन्होंने बनायी थी, उसके पीछे उन्होंने सिद्धान्त दिया था कि कल के क्रान्तिकारी हमारे कम्युनिस्ट साम्राज्य शासन प्राप्त होने के पश्चात् मनोवृत्ति में परिवर्तन होने के कारण आज के प्रतिक्रान्तिकारी हुए यदि क्रान्ति का रथ आगे खींच कर ले जाना है तो उनको हटाना पड़ेगा, लेकिन साथ ही यह कहा कि इसका मतलब यह नहीं कि यदि हमने पुराने क्रान्तिकारी या वही शासक प्रतिक्रान्तिकारियों को हटा दिया तथा आज के क्रान्तिकारियों के हाथ में शासन आया तो क्रान्ति का रथ अखण्ड रूप से आगे बढ़ेगा इसकी कोई गारण्टी नहीं है, क्योंकि जैसे १९४८ के क्रान्तिकारी १९६७ में प्रतिक्रान्तिकारी बन गये वैसे १९६७ के क्रान्तिकारी कम्यूनिस्ट शासक १०-१५ साल बाद प्रति-क्रान्तिकारी नहीं बनेंगे इसकी कोई गारण्टी नहीं और अखण्ड क्रान्ति का सिद्धान्त माओ ने दिया। यह बात स्पष्ट दिखाती है कि हाथ में सत्ता आ गयी तो समाज में परिवर्तन लाकर हम स्थायी समाज निर्माण करेंगे यह सोचना गलत है।

## मनोवृत्ति में परिवर्तन आवश्यक

जब तक मनोवृत्ति में परिवर्तन नहीं होता, सत्ता बदल गयी परन्तु मनोवृति जो पहले थी वही है। मनोवृति में जब तक बदल नहीं होता, परिवर्तन नहीं होता तब तक सत्ता में

परिवर्तन होने के कारण न तो समाज में परिवर्तन हो सकता है आवश्यक मात्रा में और न तो ऐसे परिवर्तित समाज को स्थायित्व प्राप्त हो सकता है। कम्युनिस्ट देशों के आज के दृश्य से हम यह आसानी से समझ सकते हैं। दुर्भाग्य की बात है कि हमारे भी देश में लोग इन देशों का अनुकरण करते हुए सत्ता के माध्यम से हम समाज में परिवर्तन करेंगे यह विचार करते हैं। क्या सत्ता के माध्यम से समाज में परिवर्तन हो सकता है? राष्ट्र पुनर्निर्माण की प्रक्रिया क्या सत्ता के माध्यम से पूरी हो सकती है? आज सर्वसाधारण नागरिक यही समझता है कि हमारा कोई काम नहीं; जो करना है सब सरकार करेगी। राष्ट्र पुनर्निर्माण की कोई भी जिम्मेदारी यदि आती है तो वह सीधे कहता है कि हमने पाँच साल के लिए सरकार को चुन दिया है अब सारी जिम्मेदारी सरकार निभाएगी। यह वह नहीं सोचता कि यदि सारी जिम्मेदारी सरकार की होगी तो सारे अधिकार भी सरकार को देने पड़ेंगे। क्योंकि जिम्मेदारी और अधिकार समप्रमाण में होने चाहिए। यदि राष्ट्र पुनर्निर्माण के सभी कार्यों की जिम्मेदारी हम सरकार पर देते हैं तो फिर सम्पूर्ण अधिकार सरकार को देना पड़ेगा और फिर सरकार तानाशाह बन गयी तो शिकायत करने का कोई अधिकार हमें नहीं रहता, यह बात सर्वसाधारण नागरिक भूल जाता है।

## हमारा संविधान एक अन्धानुकरण

एक दूसरी भी बात भूलती है आपका सिस्टम क्या है? हमारे देश में एक विशेष सिस्टम चल रहा है। जो कांस्टीट्यूशन हमारे देश का है वह एक ऐसा विशेष कांस्टीट्यूशन है जिसमें १९३५ के गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया एक्ट के कई क्लाजेज ऐसे स्वीकार किये गये जो अंग्रेजी सरकार ने अपनी सुविधा के लिए बनाये थे, ऐसे क्लालेज (Clauses) उसमें इनकॉरपोरेट (Incorporate) किये गये और ग्रेट ब्रिटेन की पद्धति का अन्धानुकरण करते हुए हमारी कांस्टीट्यूशन बनायी गयी, जो हमारे देश के अनुरूप नहीं। महात्मा जी ने १९१६ - १७ में यह कहा था कि यदि हम ग्रेट ब्रिटेन के मेजोरिटी-माइनारिटी सिस्टम या पार्लियामेन्टरी सिस्टम वहाँ से उठाकर जैसे के तैसे यहाँ हिन्दुस्थान में स्वतन्त्रता के पश्चात् लागू करेंगे तो बड़ी दुर्दशा होगी। उन्होंने उदाहरण दिया था कि लाइक ए प्रॉस्टीट्युट Like a prostitute that can be bought on ऐसी परिस्थिति होगी जिसे खरीदा-बेचा जा सकता है। यह चेतावनी महात्मा जी ने

१९१७ में हिन्द-स्वराज्य में दी थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह सिस्टम यहाँ की भूमि की मूल उपज न होने के कारण विभाजनकारी है और इसके कारण सत्ता की राजनीति की आवश्यकताएँ भिन्न हैं और राष्ट्र पुनर्निर्माण की आवश्यकताएँ भिन्न हैं। सत्ता की राजनीति की आवश्यकता है तात्कालिक लोकप्रियता। राष्ट्र-पुनर्निर्माण की आवश्यकताएँ हैं लोन्ग रन प्रोजेक्ट्स Long run projects. जो लोन्ग रन प्रोजेक्ट्स का विचार करेंगे वे तात्कालिक लोकप्रियता नहीं प्राप्त कर सकते हैं। जो तात्कालिक लोकप्रियता का विचार करेंगे वे लोग लोन्ग रन प्रोजेक्ट्स नहीं ले सकते। किसी ने कहा है कि हर एक परिस्थिति में समय अलग-अलग होता है। पॉलिटीशियन के समय की स्थिति एक इलेक्शन से दूसरे इलेक्शन तक की होती है। स्टेट्समैन के समय की स्थिति दशक से दशक तक की होती है। राष्ट्र निर्माताओं के समय की स्थिति शताब्दी से शताब्दी तक होती है। इसमें इतना फर्क है कि राष्ट्र-पुनरनिर्मिति की आवश्यकताओं के साथ सत्ता की राजनीति की आवश्यकताएँ मेल नहीं खाती, ऐसे समय यह सोचना कि सत्ता के माध्यम से राष्ट्र-पुनर्निर्माण होगा यह गलत बात है।

## समाज स्वायत्त एवं स्वयंशासित होना चाहिए

यदि सत्ता के माध्यम से राष्ट्र पुनर्निर्माण होगा तो वह सत्ता सर्वोपरि होगी और वह हमारी संस्कृति को स्वीकार नहीं। हमारे यहाँ हमेशा यह माना गया कि सम्पूर्ण समाज यह स्वायत्त स्वयंशासित होना चाहिए, शासन का दायरा सीमित होना चाहिए और जो सीमित दायरा है उसके ऊपर भी नैतिक नेताओं का प्रभुत्व रहना चाहिए। जो समाज का सच्चा नेतृत्व है वह शासकों के हाथ में नहीं, कानून बनाने का भी अधिकार शासकों के हाथ में नहीं, नैतिक नेताओं के हाथ में हमारे देश में हमेशा रहा है। यह जो नैतिक नेता थे उनका धर्मदण्ड, राजदण्ड पर प्रभावी रहा और वे न तो अर्थसत्ता से युक्त थे और न शासकीय सत्ता से युक्त थे। हमारे यहाँ अलग-अलग रिलिजन होते हुए भी सबने मान लिया था कि नैतिक नेता यही राष्ट्र का नेता है। भगवान् बुद्ध ने उस समय जो ब्राह्मण संस्था थी उसके बारे में कुछ कहा था धम्मपद में। उन्होंने बड़ा विस्तृत विश्लेषण ब्राह्मण संस्था का किया और यह विश्लेषण करते हुए आखिर में उन्होंने कहा कि यह जो नैतिक नेताओं का वर्णन है यह किसका वर्णन है। 'स: ब्राह्मण: स्वस्थमनस्थ नैश्चयी' वही ब्राह्मण है, वही श्रमण है, वही भिक्षु है। अलग-

अलग सम्प्रदायों में अलग-अलग नाम से पहचाना जाता होगा। कहीं भिक्षु कहा गया होगा, कहीं श्रमण, कहीं ब्राह्मण कहा गया होगा, लेकिन यह जो सारे समाज की धारणा के लिए उपयुक्त गुण हैं, यह गुण जिसके अन्दर रहेंगे वह सारे एक ही हैं। वही ब्राह्मण है, वही भिक्षु है, वही श्रमण है। ऐसी परिभाषा उन्होंने की। राजदण्ड के ऊपर धर्मदण्ड अर्थात् यह अर्थ होगा कि नैतिक नियमों से अनियन्त्रित राजसत्ता हमारे देश के लिए अपत्ति होगी ऐसा हिन्दू विचार है और इस दृष्टि से जब तक सर्वसाधारण व्यक्ति का लेवेल आफ नेशनल कान्शिअसनेस Level of national conciousness ऊपर नहीं जाता, जिनका Level of conciousness ऊपर गया ऐसे लोगों का राष्ट्रव्यापी संगठन खड़ा नहीं होता, तब तक सत्ता यह समाज के लिए अभिशाप बनेगी, यह बात स्पष्ट है।

## सत्ता केन्द्रित समाज चिरस्थायी नहीं

हिन्दू राष्ट्र के विषय में इतिहास शास्त्रज्ञों ने जब विचार किया तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योंकि हिन्दू राष्ट्र यह आदि काल से सनातन राष्ट्र है। इतिहास ने जब कभी आँखें खोली होंगी तो उसने हिन्दुओं को राष्ट्रस्वरूप में ही देखा, लेकिन इसके पश्चात् कई राष्ट्र निर्माण हुए, विकसित हुए, भौतिक दृष्टि से प्रगति की, संसार का उन्होंने नेतृत्व किया भौतिक क्षेत्र में और इसके कारण यह जो सिविलाइजेशन का नियम है कि जिस काल में जो राष्ट्र भौतिक दृष्टि से सर्वाधिक प्रगति करता है उस राष्ट्र का नाम उस काल के सिविलाइजेशन को प्राप्त होता है तो उन-उन राष्ट्रों का नाम उस काल के सिविलाइजेशन को प्राप्त हुआ था। मानो उस काल में भौतिक नेतृत्व उन्होंने संसार का किया था। आज वे सारे राष्ट्र नष्ट हो गये। हिन्दुस्थान के बाहर के जगत् का नेतृत्व करने वाले राष्ट्र आज नष्ट हुए। वह बैबीलोनिया कहाँ है? वह असीरिया कहाँ है? पर्शिया कहाँ है? वह रोम, ग्रीस कहाँ हैं? इजिप्त कहाँ है? क्योंकि आज का इजिप्ट, आज का इटली उस काल के इजिप्ट या उस काल के रोम का सक्सेसर Successor नहीं। वे सारे राष्ट्र आज कहाँ हैं? सभी राष्ट्र मिट्टी में मिल गये। हिन्दू राष्ट्र पर कितनी आपत्तियाँ आयी। कितने आक्रमण हुए। हमारे विस्तृत भू-भाग पराये लोगों के साम्राज्य में कई साल तक रहे। शताब्दियों तक रहे। फिर भी यह हिन्दू राष्ट्र चलता आया। क्यों चलता आया? जब उन्होंने उन राष्ट्रों का और हिन्दू राष्ट्र के इतिहास का

तुलनात्मक अध्ययन किया तो उन्होंने कहा कि यह जो सारे राष्ट्र निर्माण हुए, विकसित हुए, भौतिक नेतृत्व दुनिया का किया और आखिर नष्ट हो गये उनमें से हर एक राष्ट्र जीवन के अन्तिम चरण में एक प्रक्रिया अनिवार्य रूप से दिखाई देती है और यह प्रक्रिया यह रही कि अन्तिम चरण में हर एक राष्ट्र का उनका राष्ट्रजीवन, समाज जीवन यह शासनाभिमुख, शासनावलम्बी, शासन केन्द्रित बन चुका था। शासन का महत्त्व इतना माना गया था कि सम्पूर्ण समाज का केन्द्र यानी शासन और इसके कारण पराये आक्रमण के फलस्वरूप या अन्तर्गत विघटन के कारण जब कभी भी किसी कारण से वह सरकार टूट जाती है तो जैसे सरकार टूट जाती है, वह राष्ट्र भी टूट जाता है। जैसे कोई बेल पेड़ के सहारे ऊपर चढ़ती है, वह अपने बल-बूते से नहीं तो पेड़ के सहारे ऊपर चढ़ रही है, उधर से आंधी आती है, पेड़ से टकराती है, पेड़ गिर जाता है और उसके साथ बेल भी गिर जाती है। उसी तरह राष्ट्रजीवन शासन केन्द्रित होने के कारण जैसे ही सरकार टूट जाती है वह राष्ट्र टूट जाता है। इसी प्रक्रिया में ये सारे राष्ट्र बैबीलोनिया, पर्शिया, रोम, ग्रीस, इजिप्त, मिस्र नष्ट हुए।

## हिन्दू समाज के चिरजीवन का रहस्य

हिन्दुओं के बारे में कहा कि इनकी विशेषता यह रही कि इनका समाज शासनावलम्बी शासन केन्द्रित नहीं रहा। शासन को इन्होंने सीमित महत्त्व दिया और समाज यह स्वायत्त रहा, स्वयंशासित रहा, स्वयं संगठित रहा। इसके कारण कई शासन आये और कई शासन गये परन्तु राष्ट्र जीवन पर इसका बुरा असर नहीं हो सका। कई राजा आये, कई सम्राट आये, कई सुल्तान आये, कई बादशाह आये, कई वायसराय आये, कई प्राइम मिनिस्टर आये, कई आयेंगे लेकिन राष्ट्र जीवन यह अक्षुण्ण चलता रहेगा, अखण्ड चलता रहेगा। यह विशेषता जो हमारे इस चिरन्तन राष्ट्र की है कि यहाँ की स्वयंशासित स्वयं संगठित समाज रचना जिसमें सत्ता का स्थान सीमित है और जहाँ सत्ता या शासन यह समाज केन्द्रित है, समाज शासन केन्द्रित नहीं, इस तरह की हिन्दू रचना के कारण यह हिन्दू समाज अब तक अक्षुण्ण है, कायम है। ऐसा इतिहास शास्त्रज्ञों ने निष्कर्ष निकाला। टेनीसन की एक कविता है 'The Brook' जिसका अर्थ है- निर्झर कहता कि मेरे किनारे से कई लोग आते हैं और जाते हैं, आने वाले आते हैं, जाने वाले जाते हैं लेकिन मैं अखण्ड बहता रहता हूँ। कहा कि 'मैन मे कम एण्ड मैन

मे गो बट आई गो आन फॉर एवर' इसी तरह मानो हिन्दू राष्ट्र कह रहा है कि 'गवर्नमेन्ट मे कम एण्ड द गवर्नमेन्ट मे गो, बट द हिन्दू नेशन गोज-आन फॉर एवर' गवर्नमेन्ट आयेगी और जायेगी, लेकिन हिन्दू राष्ट्र अखण्ड चलता रहेगा। इस चिरन्तन सत्य का रहस्य कुछ होगा। यह रहस्य शासन को सीमित महत्त्व देने, समाज को शासन केन्द्रित बनाने के बजाय शासन को समाज केन्द्रित रखना और यह जो समाज है, यह स्वायत्त और स्वयंशासित रहे। इस तरह सुसंगठित रहे तथा सुसंगठित याने हर एक हृदय पर सम्पूर्ण समाज के साथ एकात्मता का संस्कार अंकित हो एवं इस तरह के समाज समर्पित व्यक्तियों का अनुशासनबद्ध संगठन याने सम्पूर्ण हिन्दू राष्ट्र यह जो परम्परा रही, इसी में हमारे इस चिरन्तनता का महत्व है। पाश्चिमात्य जितने इज्म्स Isms थे उन्होंने यह कहा कि बाह्य रचना में परिवर्तनों के कारण मन बदलता है, यह गलत बात है। यह सारे सिद्धान्त फैल हो चुके हैं।

## अनुशासनबद्ध संगठन

संस्कारों का महत्त्व है, समाज रचना का महत्व है। इसका बहुत अच्छा विश्लेषण स्वर्गीय पूजनीय डा. बाबा साहब अम्बेडकर का है। बौद्ध परिषद में काठमाण्डू में जो इतिहास प्रसिद्ध भाषण हुआ था, उस भाषण के बारे में कहा जा सकता है कि यह उनका एक तरह से पब्लिक टेस्टमेंट है, जिसमें उन्होंने बौद्धवाद और मार्क्सवाद की तुलना की थी। और उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि यद्यपि मार्क्सवाद समानता की बात कर रहा है तो भी जो अपवित्र साधन हिंसा को हाथ में लेकर वह आगे बढ़ने को सोच रहा है उससे समस्या सुलझने वाली नहीं है बल्कि उलझने बढ़ने वाली है। लेकिन जो हमारा मार्ग रहा है यह हमारा मार्ग अहिंसा के आधार पर व्यक्ति के हृदय में परिवर्तन लाना है। यही स्थायी मार्ग रहेगा। जो बुद्धिज्म और मार्क्सिज्म की तुलना उन्होंने की है उसमें बाह्य स्थिति में परिवर्तन के कारण नहीं तो मनुष्य के हृदय के संस्कारों के कारण समाज रचना में स्थायित्व आ सकता है यह विचार स्पष्ट रूप से प्रकट किये। इस बात का महत्त्व समझते हुए रचना कोई भी आ सकती है। जैसा कि मैंने प्रारम्भ में कहा, सामाजिक रचना, आर्थिक रचना, राजनीतिक रचना कोई भी लाने में हमें कोई आपत्ति नहीं है। सनातन धर्म के प्रकाश में उसके अनुकूल ऐसी कोई भी रचना यहाँ आ सकती है, किन्तु हर एक व्यक्ति के हृदय पर समाज के साथ एकात्मता

का संस्कार अंकित करते हुए ऐसे व्यक्तियों का अनुशासनबद्ध संगठन सम्पूर्ण देश में निर्माण करना यही आने वाले परम वैभव सम्पन्न हिन्दू राष्ट्र का इन्फ्रा-स्ट्रक्चर है, यह बात हम लोगों को ध्यान में रखना चाहिए। 'परं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रम्' ऐसा हम कह रहे कि परमवैभवशाली हिन्दूराष्ट्र का इन्फ्रा-स्ट्रक्चर मानो यह आज की हमारी शाखाएँ हैं। यह कार्य-कारण भाव हम लोगों को समझना चाहिए तभी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विषय में हम ठीक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

भारत माता की जय।।